facebook.com/ thebharatshri
twitter.com/ thebharatshri
website thebharatshri

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 06 अक्टूबर 2025 ● वर्ष 7 ● अंक 11 ● मूल्य: 5 रुपए

आयुर्वेद से लौटे स्वस्थ जीवन की ओर

पाठ से होता है तन, मन, धन की समस्याओं का निवारण

पेज-10-11

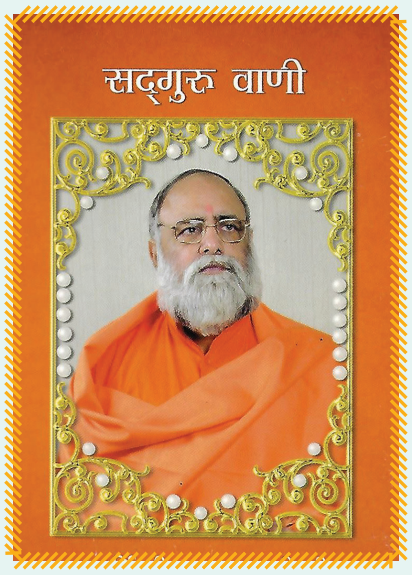

दिव्य पाठ से भक्ति, मुक्ति, संतान, अर्थ, काम सहित हर प्रकार की मनोकामनाएं पूर्ण की जा सकती हैं। यह तथ्य पूरी तरह शास्त्रोक्त है।

●

जिन असाध्य रोगों का इलाज इस जगत में नहीं है, वे रोग दिव्य पाठ से सहज दूर होते हैं। इस तथ्य को स्वयं वैज्ञानिक जगत प्रमाणों के साथ स्वीकार कर रहा है।

●

प्रभु कृपा के आलोक से निर्धनता को सम्पन्नता में परिवर्तित किया जा सकता है। इस आलोक में मां लक्ष्मी की कृपाओं का वास है।

ब्रिटेन का झुकाव भारत की ओर

9 ब्रिटिश यूनिवर्सिटीज खोलेंगी भारत में कैंपस

@ भारतश्री ब्यूरो

भारत और ब्रिटेन के बीच रिश्ते नई ऊंचाइयों की ओर बढ़ रहे हैं। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने गुरुवार को मुंबई में घोषणा की कि ब्रिटेन की नौ प्रमुख यूनिवर्सिटीज़ अब भारत में अपने कैंपस खोलेंगी।यह फैसला दोनों देशों के बीच हुई व्यापक व्यापार और शिक्षा साझेदारी का हिस्सा है।इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और स्टार्मर ने व्यापार समझौते (CETA) पर हस्ताक्षर किए, जिससे दोनों देशों के बीच निवेश और कारोबार को नई गति मिलेगी।

युवाओं और कारोबारियों दोनों के लिए फायदेमंद

भारत और ब्रिटेन के बीच हुए इस समझौते को ऐतिहासिक बताते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि इससे व्यापार में सुगमता आएगी, रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और युवा पीढ़ी को ग्लोबल शिक्षा का लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा, "यह समझौता न केवल आयात-निर्यात को सरल बनाएगा, बल्कि दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं को नई ताकत देगा।"मोदी और स्टार्मर की यह मुलाकात सिर्फ एक औपचारिक वार्ता नहीं थी, बल्कि इसमें शिक्षा, रक्षा, तकनीक, व्यापार, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक शांति जैसे कई अहम विषयों पर चर्चा हुई। दोनों नेताओं ने 'विजन 2030' के तहत भारत-ब्रिटेन संबंधों को और मज़बूत करने पर जोर दिया।

भारत की यात्रा मेरे लिए सौभाग्य की बात- स्टार्मर

ब्रिटिश प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने अपनी भारत यात्रा को यादगार बताया। उन्होंने कहा, "जुलाई में ब्रिटेन में प्रधानमंत्री मोदी की मेजबानी करना मेरे लिए सम्मान की बात थी, और कुछ ही महीनों बाद भारत आना मुझे गर्व और खुशी दोनों दे रहा है।"स्टार्मर ने कहा कि भारत ब्रिटेन का स्वाभाविक साझेदार है और दोनों देश लोकतंत्र, स्वतंत्रता और कानून के साझा मूल्यों से बंधे हैं। उन्होंने कहा कि भविष्य की चुनौतियों का सामना भारत और ब्रिटेन मिलकर करेंगे — चाहे वह तकनीकी क्रांति हो या जलवायु संकट।

स्टार्मर के ऐलान के अनुसार, ब्रिटेन की नौ प्रतिष्ठित

यूनिवर्सिटीज़ जल्द ही भारत में अपने कैंपस खोलेंगी। इनमें ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, इम्पीरियल कॉलेज लंदन, यूनिवर्सिटी ऑफ मैनचेस्टर और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स जैसी नामी संस्थाएं शामिल हो सकती हैं।यह पहल भारतीय छात्रों के लिए अभूतपूर्व अवसर लेकर आएगी। अब भारतीय छात्रों को ब्रिटिश डिग्री पाने के लिए विदेश जाने की जरूरत नहीं होगी, बल्कि वे अपने ही देश में अंतरराष्ट्रीय स्तर की शिक्षा हासिल कर सकेंगे।शिक्षा मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक, यह भारत के "ग्लोबल एजुकेशन हब" बनने की दिशा में ऐतिहासिक कदम है।

भारत-ब्रिटेन व्यापार समझौते से खुलेगा आर्थिक सहयोग का नया अध्याय

दोनों देशों के बीच हस्ताक्षरित व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौता (CETA) आने वाले वर्षों में कारोबार के नए रास्ते खोलेगा। इस समझौते से आयात-निर्यात की प्रक्रिया सरल होगी, कंपनियों को टैक्स और कस्टम्स में रियायतें मिलेंगी और छोटे उद्यमों को अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुंचने में आसानी होगी।मोदी ने कहा कि यह समझौता न केवल व्यापारिक संबंधों को मजबूत करेगा बल्कि यह दोनों देशों की अर्थव्यवस्था में साझी समृद्धि का आधार बनेगा। उन्होंने इसे "नया आर्थिक पुल" बताया, जो यूरोप और एशिया को जोड़ता है।

मोदी-स्टार्मर की बातचीत में उठा यूक्रेन और गाजा का मुद्दा

प्रधानमंत्री मोदी ने मुलाकात के दौरान वैश्विक शांति की दिशा में भारत की भूमिका दोहराई। उन्होंने कहा, "भारत यूक्रेन और गाजा में संघर्ष विराम और स्थिरता के सभी प्रयासों का समर्थन करता है। हम बातचीत और कूटनीति के जरिए ही शांति का रास्ता तलाशने में विश्वास करते हैं।"

स्टार्मर ने भी भारत के इस रुख की सराहना की और कहा कि ब्रिटेन अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत के साथ मिलकर शांति बहाली के प्रयासों को आगे बढ़ाना चाहता है। दोनों नेताओं ने इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में स्थिरता और संतुलन बनाए रखने पर भी सहमति जताई।

MN DIVINE
ORDER ALL TYPES OF :
• POOJA SAMAGRI,
• AYURVEDIC MEDICINE
• AND PRATIMA.
Be-Fresh
NOW GET AT YOUR HOME ON
MNDIVINE.COM
अभिमंत्रित धूपबत्ती
ORDER NOW
https://mndivine.com/
HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)

हवा से पानी निकालने वाले वैज्ञानिकों को मिला केमिस्ट्री का नोबेल

@ मनीष पांडेय

विज्ञान की दुनिया में इस साल का सबसे बड़ा सम्मान ऐसे वैज्ञानिकों को मिला है जिन्होंने हवा में छिपे पानी को खोज निकाला। 2025 का केमिस्ट्री नोबेल पुरस्कार जापान के सुसुमु कितागावा, ऑस्ट्रेलिया के रिचर्ड रॉबसन और अमेरिका के उमर एम. याघी को संयुक्त रूप से दिया गया है। स्वीडन की रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज ने बुधवार को इसकी घोषणा की। इन तीनों ने मिलकर ऐसी रासायनिक संरचनाएं बनाई हैं जिनसे गैसें और अन्य पदार्थ आसानी से गुजर सकते हैं। इन संरचनाओं को मेटल ऑर्गेनिक फ्रेमवर्क कहा जाता है।

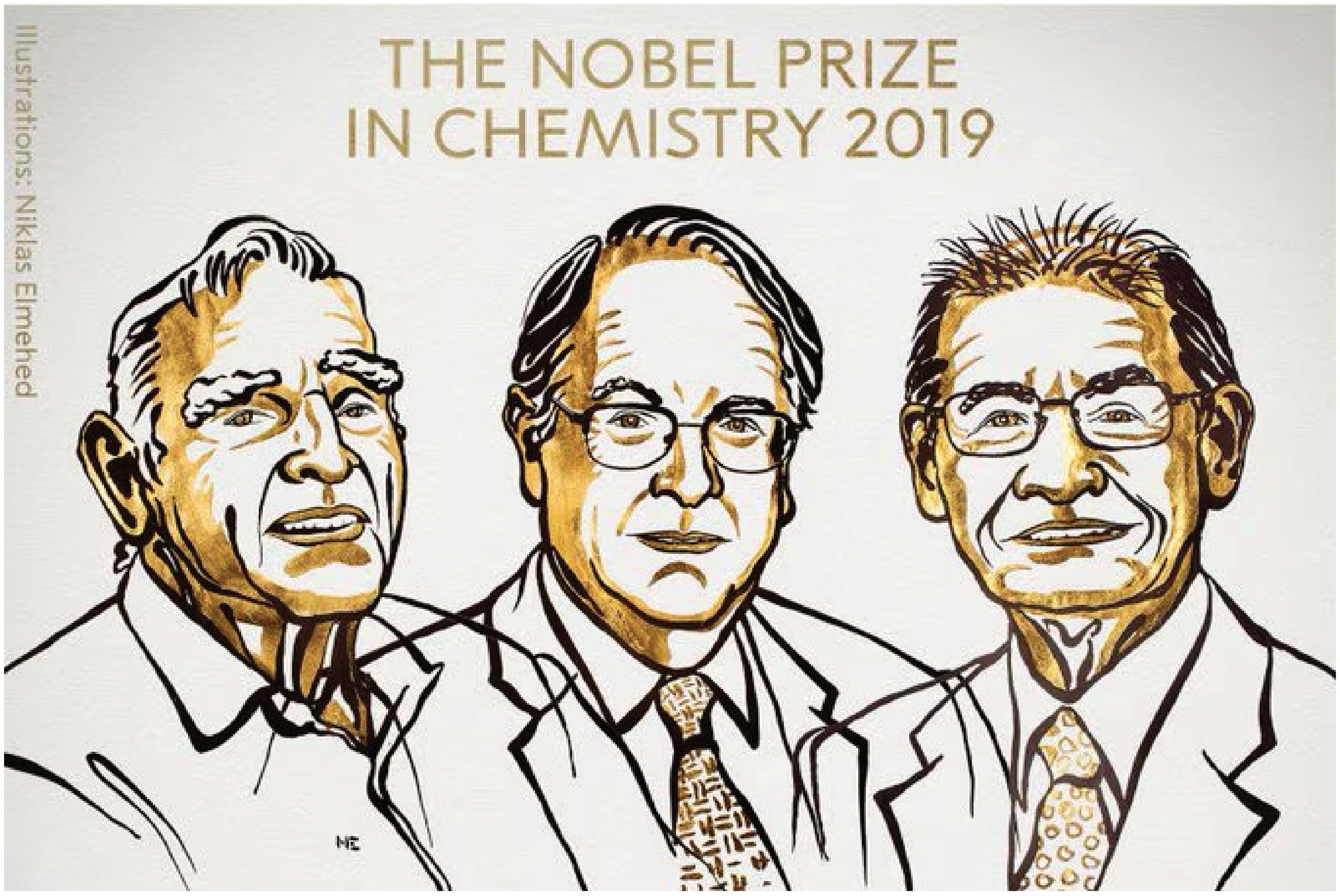

एटम की जालियों से निकला नया जीवन सूत्र

MOF को समझना आसान नहीं है, लेकिन इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। जैसे किसी घर की दीवारों में कई खिड़कियां होती हैं, जिनसे हवा और रोशनी अंदर आती है वैसे ही MOF की भी रासायनिक दीवारों में हजारों सूक्ष्म छेद होते हैं। इन छेदों से हवा, पानी या गैसें अंदर-बाहर हो सकती हैं। वैज्ञानिकों ने इन्हें इस तरह डिजाइन किया कि वे किसी खास चीज़ को पकड़ सकें या रोक सकें। यही वजह है कि इन्हें भविष्य की तकनीक कहा जा रहा है।इन खास संरचनाओं की मदद से हवा में मौजूद नमी को खींचकर पानी बनाया जा सकता है, जहरीली गैसों को रोका जा सकता है, और वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड जैसी गैसों को हटाया जा सकता है। यही कारण है कि इस खोज को "ग्रीन केमिस्ट्री की नई दिशा" कहा जा रहा है।

रेगिस्तान की हवा में पानी की बूंदें

अमेरिका के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से जुड़े वैज्ञानिक उमर याघी ने पहली बार "मेटल ऑर्गेनिक फ्रेमवर्क" शब्द का इस्तेमाल किया। 1999 में उन्होंने "MOF-5" नाम की संरचना बनाई, जो बेहद स्थिर और विशाल अंदरूनी सतह वाली थी। कुछ ग्राम MOF-5 में एक फुटबॉल मैदान जितना क्षेत्रफल समा सकता था। यही वह खोज थी जिसने उन्हें दुनिया का ध्यान दिलाया।बाद में उन्होंने अपनी टीम के साथ एरिजोना के रेगिस्तान में एक प्रयोग किया। रात में यह पदार्थ हवा से नमी खींच लेता था, और सुबह जब सूरज की रोशनी उस पर पड़ती, तो वही नमी पानी में बदल जाती थी। यानी, अब हवा से पानी निकालना किसी कल्पना की बात नहीं रही। इस प्रयोग ने विज्ञान को जीवन के और करीब ला दिया।

कितागावा की जिद ने दिया स्थायित्व

जापान के सुसुमु कितागावा ने 1990 के दशक में इस दिशा में काम शुरू किया था। उस समय उनके प्रयोगों को ज्यादा गंभीरता से नहीं लिया गया। उनके बनाए ढांचे सूखने पर टूट जाते थे और कई वैज्ञानिकों ने इसे असफल करार दिया। लेकिन कितागावा ने हार नहीं मानी। उन्होंने अपनी प्रयोगशाला में दिन-रात मेहनत कर 1997 में ऐसे MOF तैयार किए जो सूखने के बाद भी स्थिर बने रहते थे।कितागावा ने यह भी साबित किया कि ये संरचनाएं सिर्फ कठोर नहीं बल्कि लचीली भी हो सकती हैं। उन्होंने कहा था कि ये "फेफड़ों की तरह सांस लेने वाले पदार्थ" हैं जो जरूरत पड़ने पर गैस को अंदर लेते हैं और फिर छोड़ देते हैं। इसीलिए इन्हें "सॉफ्ट मटेरियल्स" की श्रेणी में रखा गया।

रिचर्ड रॉबसन ने दी विचार की पहली चिंगारी

इस खोज की नींव ऑस्ट्रेलिया के रिचर्ड रॉबसन ने रखी थी। मेलबर्न विश्वविद्यालय में पढ़ाते समय वे अणुओं के मॉडल बनाकर छात्रों को समझाते थे। एक दिन उन्हें ख्याल आया कि अगर असली अणु भी इस तरह जुड़ सकें, तो उनसे नई तरह की रासायनिक इमारतें बनाई जा सकती हैं।1989 में उन्होंने तांबे के आयनों को चार भुजाओं वाले कार्बनिक अणु से जोड़कर एक नई क्रिस्टल संरचना बनाई। यह अंदर से खोखली थी और यहीं से "मेटल ऑर्गेनिक नेटवर्क" का विचार पैदा हुआ। हालांकि यह शुरुआती ढांचा कमजोर था, लेकिन रसायनशास्त्र में यह पहली बार था जब किसी ने अणुओं से "इमारतें" बनाने की कल्पना की थी।

एक खोज, कई फायदे

आज MOF का इस्तेमाल कई क्षेत्रों में किया जा रहा है। इससे हवा से पानी निकाला जा सकता है, पानी से प्रदूषक हटाए जा सकते हैं, और वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड जैसी गैसों को कैद किया जा सकता है। इसके अलावा यह तकनीक दवाओं को शरीर में धीरे-धीरे छोड़ने में भी मदद करती है।वैज्ञानिकों का कहना है कि इस खोज के जरिए दुनिया की दो बड़ी समस्याओं पानी की कमी और प्रदूषण से निपटने की दिशा में बड़ी उम्मीदें जगी हैं। यह तकनीक आने वाले वर्षों में ऊर्जा, पर्यावरण और चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है।

10 दिसंबर को होगा सम्मान समारोह

तीनों विजेताओं को 11 मिलियन स्वीडिश क्रोना (करीब 10.3 करोड़ रुपये) की राशि, सोने का मेडल और सर्टिफिकेट दिया जाएगा। पुरस्कार वितरण का आयोजन 10 दिसंबर को स्टॉकहोम में होगा, जो नोबेल पुरस्कार के जनक अल्फ्रेड नोबेल की पुण्यतिथि है।यह सम्मान हर साल उन वैज्ञानिकों को दिया जाता है जिन्होंने अपने शोध से मानव जीवन या पर्यावरण को बेहतर बनाया हो। पिछले कुछ वर्षों में केमिस्ट्री का नोबेल पुरस्कार ज्यादातर "सस्टेनेबल साइंस" यानी टिकाऊ तकनीकों के क्षेत्र में हुआ है।

विश्व भर से मिली प्रतिक्रियाएं

भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. आर. चंद्रन ने कहा, "यह खोज विज्ञान को प्रयोगशाला से निकालकर खेत-खलिहानों तक ले जाने वाली है। भारत के सूखे इलाकों में अगर यह तकनीक लागू की जाए, तो पेयजल की समस्या काफी हद तक खत्म हो सकती है।"जापान की पर्यावरण शोधकर्ता डॉ. हनाको मुराकामी ने कहा, "कितागावा ने यह साबित कर दिया कि विज्ञान में धैर्य सबसे बड़ा हथियार है। उन्होंने असफल प्रयोगों से सफलता का रास्ता निकाला।"वहीं भारत में सत्ता पक्ष से जुड़े नेता राजीव शुक्ला ने कहा कि "भारत सरकार ग्रीन टेक्नोलॉजी और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में ऐसे शोधों को बढ़ावा देने के लिए नई नीतियां बना रही है। आने वाले वर्षों में हम भी MOF आधारित तकनीकों को अपनाने की दिशा में कदम बढ़ाएंगे।"इस खोज का सबसे बड़ा संदेश यही है कि रसायनशास्त्र अब सिर्फ किताबों या प्रयोगशालाओं की चीज़ नहीं रहा। यह हमारे रोज़मर्रा के जीवन का हिस्सा बनता जा रहा है। चाहे हवा से पानी निकालना हो, प्रदूषण रोकना हो या दवा को शरीर के सही हिस्से तक पहुंचाना MOF जैसी तकनीकें विज्ञान को इंसान की सेवा में ला रही हैं।

भारत पर भड़के पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ने कहा

"बिहार चुनाव के कारण भारत कर रहा है उकसावे वाली कार्रवाई"

भारतीय फाइटर जेट गिराने का दावा, चीन के हथियारों की तारीफ और मोदी सरकार पर हमला

@ रिंकू विश्वकर्मा

पाकिस्तान की राजनीति और सेना एक बार फिर भारत विरोधी सुर में नजर आ रही है। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने एक बार फिर भड़काऊ बयान देते हुए कहा कि भारत बिहार चुनाव को प्रभावित करने के लिए सीमाओं पर तनाव बढ़ा रहा है। उन्होंने यह भी दावा किया कि मई में हुए संघर्ष के दौरान पाकिस्तान ने भारत के छह फाइटर जेट मार गिराए थे।आसिफ ने यह बयान बुधवार को पाकिस्तानी न्यूज चैनल 'समा टीवी' पर दिया, जहाँ उन्होंने भारत की नीति, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारतीय विदेश नीति पर जमकर निशाना साधा।

"भारत की राजनीति में गिरावट, बिहार चुनाव से जोड़कर भड़काऊ कदम"

आसिफ ने कहा कि भारत इस समय अंदरूनी राजनीतिक दबाव झेल रहा है। बिहार चुनाव करीब हैं और मोदी सरकार चाहती है कि लोगों का ध्यान घरेलू मुद्दों से हटाकर सीमा विवाद पर लगाया जाए।उन्होंने कहा ,"भारत में जनता महंगाई और बेरोज़गारी से परेशान है। ऐसे में सीमाओं पर तनाव बढ़ाना मोदी के लिए राजनीति का आसान रास्ता है। वे पाकिस्तान को निशाना बनाकर अपने वोटरों को एकजुट करना चाहते हैं।"रक्षा मंत्री के इस बयान से दोनों देशों के बीच पहले से मौजूद तनाव में और इज़ाफ़ा हुआ है। भारत की ओर से अब तक इस बयान पर कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं दी गई है।

"मई के संघर्ष में भारत के छह फाइटर जेट गिराए"

ख्वाजा आसिफ ने अपने इंटरव्यू में यह दावा भी किया कि मई में हुए सीमा संघर्ष में पाकिस्तान ने भारत के छह फाइटर जेट गिराए थे।हालांकि, भारत ने इस तरह के किसी भी दावे को पहले से झूठा और प्रचार बताया था।आसिफ ने कहा ,"मई के संघर्ष में पाकिस्तान ने भारत को बड़ा नुकसान पहुंचाया है। मोदी की लोकप्रियता में गिरावट आई है और अब उनके अपने समर्थक भी सवाल उठा रहे हैं।"उन्होंने आगे जोड़ा कि इस संघर्ष में पाकिस्तान ने अपनी सैन्य ताकत और रणनीतिक क्षमता साबित की है।

"भारत का समर्थन करने वाले देश अब चुप हैं"

आसिफ ने दावा किया कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत का प्रभाव कम हो रहा है।उनके मुताबिक ,"पहले जो देश भारत का समर्थन करते थे, अब वे चुप हैं। जो पहले न्यूट्रल रहते थे, अब पाकिस्तान के पक्ष में हैं। यह बात भारत को सालों तक परेशान करेगी।"हालांकि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की बढ़ती भूमिका और पश्चिमी देशों के साथ उसके मजबूत रिश्ते आसिफ के दावों को पूरी तरह खारिज करते हैं।

"भारत सिर्फ औरंगजेब के वक्त ही एकजुट था"

अपने बयान में आसिफ ने भारत के इतिहास पर भी टिप्पणी की। उन्होंने कहा ,"भारत सिर्फ औरंगजेब के समय में एकजुट था। उसके बाद कभी भारत एकजुट नहीं रहा। पाकिस्तान अल्लाह के नाम पर बना देश है। हम घर में चाहे लड़ लें, लेकिन जब भारत से लड़ाई की बात आती है, हम सब एक हो जाते हैं।"आसिफ के इस बयान को भारत विरोधी राजनीति के रूप में देखा जा रहा है, जो पाकिस्तान में अक्सर घरेलू समस्याओं से ध्यान हटाने के लिए इस्तेमाल की जाती है।

'भारत अपने ही विमान के मलबे में दब जाएगा'

यह पहला मौका नहीं है जब पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ने भारत को लेकर उकसाने वाले बयान दिए हैं।तीन दिन पहले ही आसिफ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X (ट्विटर) पर लिखा था कि अगर अब जंग हुई, तो भारत अपने लड़ाकू विमानों के मलबे के नीचे दब जाएगा।उन्होंने कहा ,"भारत की लीडरशिप अपनी खोई हुई साख वापस पाने के लिए भड़काऊ बयान दे रही है। नई दिल्ली जानबूझकर तनाव बढ़ा रही है ताकि जनता का ध्यान आर्थिक संकट और राजनीतिक विफलताओं से हटाया जा सके।"

"चीनी हथियारों ने भारत के खिलाफ बेहतरीन काम किया"

आसिफ के बयान से पहले पाकिस्तानी सेना के प्रवक्ता जनरल अहमद चौधरी ने भी एक विवादास्पद टिप्पणी की थी। उन्होंने कहा कि भारत के खिलाफ हालिया संघर्ष में चीन के हथियारों ने "बेहतरीन काम" किया है।जनरल चौधरी ने कहा ,"हम हर तकनीक के लिए खुले हैं, लेकिन चीनी तकनीक ने शानदार प्रदर्शन किया। पाकिस्तान ने सात भारतीय फाइटर जेट गिराए थे, जबकि भारत एक भी पाकिस्तानी विमान नहीं गिरा सका।"हालांकि भारत ने इस दावे को पूरी तरह अस्वीकार किया है और इसे भ्रम फैलाने वाला प्रचार बताया है।

पाकिस्तान की सेना पर चीन की पकड़ मजबूत

स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI) की रिपोर्ट के मुताबिक, 2020 से 2024 के बीच पाकिस्तान के 81% हथियार चीन से आए हैं।रिपोर्ट कहती है कि पाकिस्तान चीन का सबसे बड़ा हथियार ग्राहक है।पाकिस्तानी सेना के पास अमेरिकी F-16 फाइटर जेट्स भी हैं, लेकिन हाल के वर्षों में उसका रक्षा ढांचा लगभग पूरी तरह चीन पर निर्भर होता जा रहा है।

रक्षा बजट में भारी अंतर, लेकिन खर्च का प्रतिशत करीब

SIPRI के अनुसार, 2024 में पाकिस्तान का रक्षा बजट 10.2 अरब डॉलर था, जबकि भारत का बजट 86.1 अरब डॉलर तक पहुंच गया।

फिर भी, GDP के अनुपात में दोनों देशों का सैन्य खर्च लगभग बराबर है। पाकिस्तान अपनी GDP का 2.7% रक्षा पर खर्च करता है जबकि भारत 2.3% . भारत ने हाल के वर्षों में रक्षा क्षेत्र में बड़े सुधार किए हैं मेक इन इंडिया पहल के तहत स्वदेशी हथियार उत्पादन और रक्षा निर्यात दोनों बढ़े हैं।

पाकिस्तान की घरेलू सियासत है बयानबाजी के पीछे की हकीकत

विशेषज्ञों के अनुसार, ख्वाजा आसिफ के बयान पाकिस्तान की आंतरिक राजनीतिक परिस्थितियों से जुड़े हैं। पाकिस्तान में आर्थिक संकट गहराता जा रहा है, IMF के दबाव और बढ़ती महंगाई ने आम जनता का जीना मुश्किल कर दिया है ऐसे में भारत को निशाना बनाना, वहां की राजनीति में "राष्ट्रवाद" को हवा देने का एक पुराना हथकंडा माना जाता है। एक वरिष्ठ विश्लेषक बताते हैं कि जब पाकिस्तान के नेता अपनी नाकामियों को छिपाना चाहते हैं, तो वे भारत का नाम लेते हैं। यही सिलसिला इस बार भी चल रहा है।"

भारत की ओर से शांत रुख, पर नजरें सीमा पर

भारत सरकार ने अब तक आसिफ के बयानों पर कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं दी है।

विदेश मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक, भारत "उकसावे वाली बयानबाजी" में नहीं फंसना चाहता, लेकिन सुरक्षा एजेंसियां सतर्क हैं और सीमाओं पर नजर रखी जा रही है।पाकिस्तान के नेताओं के बयान यह दिखाते हैं कि पड़ोसी देश की राजनीति में भारत विरोध एक आसान हथियार बना हुआ है।

जहाँ भारत तकनीकी विकास और रक्षा आधुनिकीकरण में आगे बढ़ रहा है, वहीं पाकिस्तान घरेलू संकट से जूझ रहा है।

पुरुषों की खामोशी, मौत की खामोशी

क्यों महिलाओं से ज्यादा आत्महत्या कर रहे हैं पुरुष ?

NCRB से लेकर WHO तक के आंकड़े चौंकाने वाले, डिप्रेशन में महिलाएं आगे लेकिन मौत का रास्ता पुरुष चुनते हैं

@ अभिषेक चौबे

दुनिया भर में खुदकुशी का ग्राफ लगातार ऊपर जा रहा है। यह आंकड़े जितने डराने वाले हैं, उतने ही सोचने पर मजबूर भी करते हैं। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो (NCRB) की हालिया रिपोर्ट बताती है कि भारत में आत्महत्या का सबसे बड़ा बोझ पुरुषों पर है।दो साल पहले, सिर्फ 30 से 45 साल की उम्र के 43 हजार पुरुषों और 12 हजार महिलाओं ने आत्महत्या की।

पहली नज़र में यह चौंकाता है, क्योंकि डिप्रेशन और अवसाद जैसी मानसिक समस्याओं से जूझने के मामले महिलाओं में ज्यादा पाए जाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, वैश्विक स्तर पर महिलाओं में डिप्रेशन का खतरा पुरुषों की तुलना में लगभग डेढ़ से दोगुना है। फिर भी, जब बात आत्महत्या से मौत की आती है, तो आंकड़े पुरुषों की ओर झुक जाते हैं।

दुनिया में हर साल सात लाख से ज्यादा मौतें

WHO का अनुमान है कि हर साल दुनिया में सात लाख से ज्यादा लोग खुदकुशी करते हैं। इसमें भी पुरुषों का प्रतिशत महिलाओं से कहीं ज्यादा है।अमेरिका में पुरुष आत्महत्या दर महिलाओं से 4 गुना ज्यादा है।ऑस्ट्रेलिया में यह अंतर 3 गुना है।अधिकांश देशों में यह दर 2 गुना तक पहुंचती है।भारत भी इस वैश्विक पैटर्न से अछूता नहीं।महिलाओं में डिप्रेशन ज्यादा, फिर भी पुरुष क्यों हार मानते हैं?

महिलाओं में डिप्रेशन ज्यादा क्यों?

WHO के 2021 के आंकड़ों के अनुसार, दुनियाभर में करीब 58 करोड़ महिलाएं और 51 करोड़ पुरुष अवसादग्रस्त हैं। महिलाओं में यह स्थिति हार्मोनल बदलाव, सामाजिक दबाव, घरेलू और बाहरी जिम्मेदारियों की वजह से ज्यादा दिखाई देती है।भारत में भी यही तस्वीर है। नेशनल मेंटल हेल्थ सर्वे बताता है कि डिप्रेशन पेशेंट्स में ज्यादातर महिलाएं होती हैं। कई बार वे परिवार और समाज के दबाव में अपनी परेशानी खुलकर नहीं बता पातीं। इसके बावजूद महिलाएं पुरुषों की तुलना में मदद लेने के लिए ज्यादा आगे रहती हैं। यही वजह है कि उनके केस डेटा में ज्यादा दर्ज होते हैं।

लेकिन असली फर्क यहां आता है

महिलाएं अवसाद में रहते हुए आत्महत्या की कोशिश ज्यादा करती हैं। पर पुरुष जब कोशिश करते हैं, तो मौत में बदलने की संभावना कहीं ज्यादा होती है।

सुसाइड अटेम्प्ट बनाम सुसाइड डेथ

यह फर्क दरअसल सुसाइड अटेम्प्ट और सुसाइड डेथ के बीच का है।महिलाएं अक्सर दवाओं का ओवरडोज़ जैसी कोशिश करती हैं। ऐसे मामलों में अगर समय पर मदद मिल जाए तो जान बच सकती है।पुरुष सीधे घातक तरीकों का चुनाव करते हैं। अमेरिका में आत्महत्या का आधा से ज्यादा हिस्सा फायरआर्म्स यानी हथियारों से होता है।भारत में भी पुरुष फांसी, जहर या ट्रेन के आगे कूदने जैसे खतरनाक तरीकों का सहारा लेते हैं।इसलिए पुरुषों की कोशिशें अक्सर आखिरी कोशिश साबित होती हैं।

पुरुष क्यों चुप रहते हैं?

यह सवाल सिर्फ मानसिक स्वास्थ्य का नहीं, बल्कि सामाजिक ढांचे का भी है।पुरुषों को बचपन से सिखाया जाता है कि "मर्द रोते नहीं", "कमजोर मत बनो।"जब कोई पुरुष डिप्रेशन में होता है, तो वह अपनी बात कहने से झिझकता है। नकारात्मक भावनाएं भीतर ही भीतर बढ़ती रहती हैं और जब चरम पर पहुंचती हैं, तो वह एक कदम में सब खत्म कर देता है।इसके अलावा, नशे और शराब जैसी लतें पुरुषों में डिप्रेशन को और गहरा कर देती हैं। आंकड़े बताते हैं कि ड्रग्स और अल्कोहल की लत आत्महत्या के सबसे बड़े ट्रिगर बनते हैं।

कैसे बचाई जा सकती हैं जानें?

कई देशों ने पुरुष आत्महत्या को गंभीरता से लिया और अलग रणनीति अपनाई।

ऑस्ट्रेलिया में Men's Shed बनाया गया। यहां एक कम्युनिटी बनाई गई, जहां पुरुष एक-दूसरे से खुलकर बात कर सकें। इसमें एक्सपर्ट्स भी शामिल होते हैं, जो पुरुषों की मानसिक स्थिति को समझते हुए इलाज और काउंसलिंग सुझाते हैं।

स्वीडन में अलग हेल्पलाइन और ट्रेनिंग सेंटर बनाए गए हैं। वहां सरकार और NGO ने पुरुषों के लिए खास स्क्रिप्ट तैयार की। काउंसलिंग में पुरुषों को अलग तरीके से डील किया जाता है। Real Men Talk जैसे कैंपेन भी है। यह मैसेज दिया जाता है कि पुरुषों को भावनाएं दबाने की जरूरत नहीं। असली ताकत बोलने में है, चुप रहने में नहीं।

भारत के लिए सबक

भारत में भी इस दिशा में कदम उठाने की जरूरत है।मानसिक स्वास्थ्य के लिए पुरुषों पर फोकस्ड कैंपेन चलने चाहिए।काउंसलिंग और हेल्पलाइन को जेंडर-सेंसिटिव बनाया जाए।पुरुषों को यह बताया जाए कि मदद लेना कमजोरी नहीं, बल्कि समझदारी है।

खामोशी तोड़नी होगी

आज भी समाज में "Mard ko dard nahi hota" जैसी सोच जिंदा है। यही सोच पुरुषों की खामोशी और उनकी मौत की वजह बन रही है।अब वक्त है कि इस सोच को तोड़ा जाए। पुरुषों को खुलकर बोलने, मदद लेने और अपनी भावनाएं जताने की आज़ादी दी जाए।अगर आप या आपका कोई जानने वाला डिप्रेशन में है तो मदद लीजिए। किसी दोस्त, परिवार या हेल्पलाइन से बात कीजिए।

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

भारत श्री

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

सोमवार, 06 अक्टूबर 2025, विक्रम संवत 2080

गरीब अमीर के बीच खाई

संघ प्रमुख मोहन भागवत जी जो कुछ भी बोलते हैं वह बहुत ही सोच समझ कर बोलते हैं संतुलित बोलते हैं। अभी दशहरे के दिन उन्होंने एक महत्वपूर्ण बात कही कि भारत में आर्थिक आधार पर बहुत तेजी से विकास तो हो रहा है लेकिन यह विकास अ संतुलित है। अमीरों की संपत्ति बहुत तेजी से बढ़ रही है और गरीब अमीर के बीच खाई लगाकर चौड़ी होती जा रही है जो कम होनी चाहिए थी । इस विषय पर हमारी सरकार को विचार करना चाहिए । मेरा ऐसा मानना है कि जो कुछ भी हो रहा है वह परिणाम है भागवत जी ने परिणाम तो बता दिया लेकिन कारण नहीं बताया और समाधान भी नहीं बताया क्योंकि उन्हें न कारण का पता है ना समाधान का। सच्ची बात यह है कि सारी दुनिया में गरीब और अमीर के बीच अंतर बढ़ रहा है भारत में भी वह दुनिया के अन्य देशों की अपेक्षा अधिक तेजी से बढ़ रहा है। लेकिन आप यदि मेरा लिखा हुआ 70 वर्ष पहले का साहित्य पढ़ेंगे तो उस समय इस बात की भविष्यवाणी की गई थी कि ऐसा होने वाला है । इसका कारण भी बताया गया था और समाधान भी बताया गया था। मैंने यह लिखा था की श्रम शोषण के उद्देश्य से ही बुद्धिजीवी कृत्रिम उर्जा का मूल्य घटाकर रखते हैं। दुनिया में बुद्धिजीवियों का वर्चस्व है और भारत में भी है। जब तक कृत्रिम उर्जा का मूल्य नहीं बढ़ेगा तब तक इस प्रकार गरीब और अमीर के बीच अंतर बढ़ेगा ही क्योंकि बुद्धिजीवी तथा अमीर एक साथ मिलकर कृत्रिम उर्जा का अधिक उपयोग करके श्रम शोषण करेंगे । इसका यह समाधान है कि भारत में कृत्रिम उर्जा का मूल्य ढाई गुना कर देना चाहिए और उक्त पूरी राशिकों एक अलग जगह रख देना चाहिए जो या तो प्रत्येक व्यक्ति में बराबर बांट दी जाए अथवा आम लोगों की सहमति से कुछ टैक्स घटाएं भी जा सकते हैं और कहीं उपयोग किया जा सकता है लेकिन यह राशि सरकार के खजाने में न जाए। परिस्थिति अनुसार यह कार्य 5 वर्षों में किया जा सकता है प्रतिवर्ष २0% इसके अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है कि आप गरीब अमीर के बीच खाई कम कर सके या आप पर्यावरण का प्रदूषण कम कर सके या अन्य ऐसी ही अनेक समस्याओं को समाधान कर सकें । जब तक आप कृत्रिम उर्जा की मूल्य वृद्धि नहीं करते तब तक आपको सारे दुष्परिणाम झेलने पड़ेंगे और उनमें से एक दुष्परिणाम का जिक्र भागवत जी ने किया है।

बजरंग मुनि

आर्ट्स की जरूरत क्यों

@ नितिन ठाकुर

किसी भी मुल्क में जब आप किसी सरकार या नेता को रोज़गार और स्किल के नाम पर आर्ट्स के पीछे पड़ता देखें तो सावधान हो जाएं। अमेरिका में खुलकर अब उन विषयों पर रिसर्च को बेकार माना जाने लगा है जिनसे इंजीनियर और डॉक्टर नहीं निकल रहे। उनके लिए नागरिक शास्त्र, इतिहास, दर्शन, साहित्य वगैरह अर्थहीन हो चुके हैं। पब्लिक को समझाया जा रहा है कि इन विषयों में रिसर्च के लिए पैसा देना बर्बादी है। इससे सोसायटी को कुछ हासिल नहीं होता। कमोबेश यही हालात भारत में बनाए जा रहे हैं। मैंने कई लोगों को ये सतही बात करते सुना है कि बच्चों को इंजीनियर डॉक्टर बनाएंगे तो वो देश के विकास में काम आएंगे लेकिन हिस्ट्री और लिटरेचर में वक्त बर्बाद करने से क्या होगा? कन्हैया कुमार वाला मामला जब चल रहा था तब कई लोग पीएचडी स्टूडेंट्स को ताने कसते थे कि ये पढ़ते हुए बूढ़े हो गए, कमाएंगे कब? ये नैरेटिव किसी समाज का मुख्य नैरेटिव बन जाए तो आप अंदाज़ा लगा पाएंगे कि ये कितना खतरनाक साबित होनेवाला है?

आर्ट्स की पढ़ाई को अक्सर “नौकरी न देने वाला” या “बेकार” करार दिया जाता है लेकिन ये समाज की रीढ़ है। ये विषय न सिर्फ़ जागरूक नागरिक बनाते हैं बल्कि सोचने-समझने की तमीज, इतिहास बोध और नैतिकता का अहसास देते हैं। विज्ञान हमें बम बनाना सिखाता है, लेकिन आर्ट्स यह समझ देती है कि बम का इस्तेमाल क्यों नहीं करना चाहिए। आर्ट्स समाजशास्त्र, राजनीति शास्त्र और दर्शन के जरिए नागरिकों को उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों का बोध कराती है। मिसाल के तौर पर, मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने दर्शनशास्त्र और साहित्य की गहरी समझ से नस्लभेद के खिलाफ आंदोलन को दिशा दी। भारत में बाबासाहेब आंबेडकर ने इतिहास और कानून की पढ़ाई से संविधान लिखा। आर्ट्स पढ़ने वाला व्यक्ति सवाल उठाता है, सरकार की नीतियों को परखता है और समाज में बदलाव लाता है। बिना इस समझ के लोग सिर्फ भीड़ बनकर रह जाते हैं।

साहित्य और दर्शन जटिल समस्याओं को अलग-अलग नजरिए से देखना सिखाते हैं। महाभारत या शेक्सपियर के नाटकों को पढ़ने से नैतिक दुविधाओं को समझने की क्षमता बढ़ती है। यह तमीज हमें फर्जी खबरों, प्रचार और एकतरफा सोच से बचाती है। आज के डिजिटल युग में, जहां सोशल मीडिया पर गलत सूचनाएं फैलती हैं, आर्ट्स की पढ़ाई हमें तथ्यों और प्रोपेगैंडा के बीच फर्क करना सिखाती है। बस शर्त ये है कि अगला वाकई ढंग से पढ़ा हो।

इतिहास हमें अतीत की गलतियों से सीखने और भविष्य को बेहतर बनाने की प्रेरणा देता है। उदाहरण के लिए द्वितीय विश्वयुद्ध के अध्ययन से हमें फासीवाद और तानाशाही के खतरे समझ आते हैं। भारत में स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास हमें एकता और बलिदान का महत्व सिखाता है। बिना इतिहास बोध के हमारी पहचान अधूरी है और हम वही गलतियां दोहरा सकते हैं, भले हमने कितनी भी वैज्ञानिक तरक्की कर ली हो और हम समृद्धि के एवरेस्ट पर बैठे हों।

विज्ञान और तकनीक हमें औजार देती है लेकिन आर्ट्स हमें उनका सही इस्तेमाल सिखाती है। परमाणु बम बनाने की तकनीक थी, लेकिन गांधी और नेल्सन मंडेला जैसे विचारकों ने अहिंसा का रास्ता दिखाया। साहित्य, कला और दर्शन सहानुभूति और मानवता सिखाते हैं। टेक्नोलॉजी के युग में आर्ट्स की पढ़ाई याद दिलाती है कि मशीनों से ज्यादा इंसानियत मायने रखती है। कुल मिलाकर आर्ट्स की पढ़ाई समाज को जागरूक, संवेदनशील और रचनात्मक नागरिक देती है। हमें अतीत से जोड़ती है, वर्तमान को समझने की शक्ति देती है और भविष्य को बेहतर बनाने की प्रेरणा देती है। बिना आर्ट्स के, हम मशीनों का समाज बनकर रह जाएंगे, जहां सिर्फ तकनीक होगी, इंसानियत नहीं। इसलिए, आर्ट्स को नजरअंदाज करना समाज की आत्मा को कमजोर करना है।

जुबानी तीर

“NDA एकजुट है और जनता का भरोसा हमारे साथ है। हम विकास की राजनीति पर चुनाव लड़ेंगे और नीतीश कुमार फिर से मुख्यमंत्री बनेंगे।

चिराग पासवान (NDA)

“नीतीश कुमार अब थक चुके हैं — न उनके पास नई सोच बची है, न बिहार के युवाओं के लिए कोई योजना। अब राज्य को नई ऊर्जा और नई दिशा चाहिए।

तेजस्वी यादव (RJD)

“अगर बिहार विधानसभा चुनाव तीन चरणों में होते तो मतदाताओं को बेहतर पहुँच मिलती यह एक राजनीतिक और प्रशासनिक विवेक का विषय है।

दीपंकर भट्टाचार्य (भाकपा-माले)

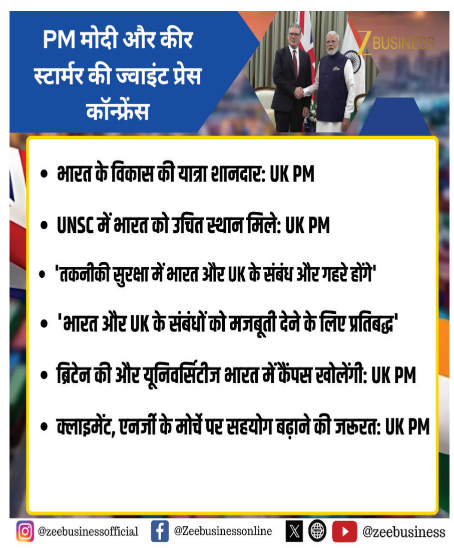

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. महिमा मक्कर द्वारा एच0टी0 मीडिया, प्लॉट नं. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-9 उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं जी. एफ. 5/115, गली नं. 5 संत निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित । संपादकः महिमा मक्कर, RNI No. DELHI/2019/77252, संपर्क 011-43563154

विज्ञापन एवं वार्षिक सब्सक्रिप्शन के लिए ऑफिस के पते पर सम्पर्क करें या फिर इन नम्बरों - 9667793987 या 9667793985 पर बात करें या इस पर media@bharatshri.com ईमेल करें।

नशे के अंधेरे से प्रकृति की रोशनी तक

आयुर्वेद से लौटे स्वस्थ जीवन की ओर

नशा आज के समय की सबसे बड़ी सामाजिक, मानसिक और स्वास्थ्य समस्याओं में से एक बन चुका है। चाहे बात शराब की हो, तंबाकू की, गांजे की या अन्य किसी रासायनिक पदार्थ की—हर प्रकार का नशा व्यक्ति की सोच, निर्णय लेने की क्षमता और अंततः उसके जीवन की दिशा को प्रभावित करता है। आधुनिक दवाइयों और पुनर्वास केंद्रों के साथ-साथ आयुर्वेद ने भी इस गंभीर समस्या से लड़ने के लिए एक सशक्त विकल्प प्रदान किया है। यह पद्धति केवल लक्षणों का इलाज नहीं करती, बल्कि व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा को संतुलित करके उसे नशा मुक्त जीवन की ओर अग्रसर करती है।

आयुर्वेद के अनुसार, नशा एक प्रकार का मानसिक और शारीरिक विकार है जो 'मनसिक दोष' और 'दोषों के असंतुलन' से उत्पन्न होता है। जब शरीर में वात, पित्त और कफ का संतुलन बिगड़ता है, और मन में रजोगुण एवं तमोगुण की प्रधानता हो जाती है, तो व्यक्ति असंतुलन की भरपाई बाहरी उत्तेजकों के माध्यम से करने लगता है। यही प्रवृत्ति धीरे-धीरे आदत, फिर लत और अंततः एक रोग का रूप ले लेती है।आयुर्वेदिक उपचार में सबसे पहले शरीर को शुद्ध करने की प्रक्रिया अपनाई जाती है। पंचकर्म इस दिशा में पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम है। इसके अंतर्गत वमन (उल्टी द्वारा शुद्धि), विरेचन (पेट की शुद्धि), बस्ती (एनिमा), नस्य (नाक द्वारा औषधि का प्रवेश), और रक्तमोक्षण (रक्त की शुद्धि) जैसे उपाय किए जाते हैं। ये प्रक्रियाएं शरीर से विषाक्त तत्वों को बाहर निकालती हैं जो नशे के कारण वर्षों तक शरीर में जमा हो जाते हैं।

इसके बाद व्यक्ति को विशेष औषधियां दी जाती हैं, जो cravings को कम करती हैं, तंत्रिका तंत्र को मजबूत करती हैं और मानसिक संतुलन को बहाल करती हैं। 'अश्वगंधा', 'शंखपुष्पी', 'ब्राह्मी', 'जटामांसी', 'यष्टिमधु' और 'गिलोय' जैसी जड़ी-बूटियाँ इस उपचार में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। ये न केवल तनाव, अवसाद और चिंता को कम करती हैं, बल्कि व्यक्ति की स्मरण शक्ति, आत्म-नियंत्रण और मानसिक स्थिरता को भी पुनर्स्थापित करती हैं।

कुछ विशेष आयुर्वेदिक योग जैसे कि 'मुक्ता पंचामृत रस', 'ब्राह्मी वटी', और 'सारस्वतारिष्ट' भी चिकित्सकीय परामर्श के अनुसार दिए जाते हैं। ये नशे की तलब को नियंत्रित करने में अत्यंत सहायक सिद्ध हुए हैं।

जहां औषधियों और पंचकर्म की प्रक्रिया शरीर को नशे के प्रभाव से मुक्त करती है, वहीं योग और ध्यान व्यक्ति के मन को नियंत्रित करने में सहायक बनते हैं। आयुर्वेद में मानसिक विकारों का सीधा संबंध आत्मा और मन के विकारों से माना गया है। नियमित प्राणायाम, विशेषकर अनुलोम-विलोम और भ्रामरी, मानसिक संतुलन को मजबूत करते हैं। ध्यान, विशेषकर 'त्राटक' और 'विपश्यना', व्यक्ति को आत्मनिरीक्षण करने में सहायता देते हैं और उसे अपनी कमजोरियों को स्वीकारने व उनसे पार पाने की शक्ति प्रदान करते हैं।

आयुर्वेद नशे को केवल एक बुरी आदत नहीं, बल्कि एक गहराई से जुड़ा मानसिक रोग मानता है, जिसकी जड़ें अक्सर व्यक्ति की भावनात्मक कमजोरियों, सामाजिक दबावों, या किसी असहनीय मानसिक आघात से जुड़ी होती हैं। इसलिए उपचार में केवल औषधि नहीं, बल्कि 'सत्संग', 'स्वाध्याय' और 'चरित्र निर्माण' की प्रक्रिया भी शामिल होती है।

नशे से मुक्ति की इस आयुर्वेदिक प्रक्रिया में खान-पान का भी अत्यंत महत्व है। सात्त्विक भोजन, जिसमें ताजा फल, हरी सब्जियां, अनाज, दूध और घी शामिल हो, व्यक्ति की मानसिक स्थिरता को मजबूत करता है। चाय, कॉफी, मसालेदार और अधिक तेलयुक्त भोजन से परहेज करने की सलाह दी जाती है। इसके साथ ही पर्याप्त नींद और एक निश्चित दिनचर्या का पालन उपचार को प्रभावी बनाता है।

नशे के शिकार व्यक्ति को जब आयुर्वेदिक इलाज के दौरान समाज और परिवार का भावनात्मक सहयोग मिलता है, तो उसकी रिकवरी और भी तेज होती है। यह उपचार प्रक्रिया लंबी हो सकती है, लेकिन यह शरीर और आत्मा दोनों को स्थायी रूप से स्वस्थ बनाती है।भारत के कई आयुर्वेदिक चिकित्सा केंद्रों, जैसे कि केरला के 'कोट्टक्कल आर्य वैद्यशाला', गुजरात के 'श्री तुलसी आयुर्वेद निकेतन', और उत्तराखंड के 'पंचगव्य आयुर्वेद संस्थान' आदि में ऐसे विशेष कार्यक्रम चलाए जाते हैं जो नशा मुक्ति को आयुर्वेदिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखते हैं। इन केंद्रों में चिकित्सा के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास, योग शिक्षा, और मानसिक सलाह भी दी जाती है।

एक बात स्पष्ट है कि नशे की लत केवल दवाओं से नहीं जाती, इसके लिए व्यक्ति की आत्म-इच्छा, मानसिक तैयारी और सही मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। आयुर्वेद व्यक्ति को यही संपूर्ण सहयोग देता है—बिना किसी साइड इफेक्ट्स के, प्रकृति की गोद में।

अंततः, नशे की लत से छुटकारा पाना एक मानसिक युद्ध है, जिसमें आयुर्वेद आपके शरीर और मन दोनों के लिए एक मजबूत हथियार बन सकता है। यदि सही समय पर इसका सहारा लिया जाए, तो यह न केवल व्यक्ति को नशे से बाहर लाने में मदद करता है, बल्कि उसे एक स्वस्थ, संयमी और संतुलित जीवन की ओर अग्रसर करता है।

आज, जब दुनिया फिर से प्राकृतिक चिकित्सा की ओर लौट रही है, आयुर्वेद नशे जैसी सामाजिक बुराई के विरुद्ध एक नई आशा की किरण बनकर उभर रहा है।

संत वनखण्डी जी सनातन धर्म के तपस्वी संरक्षक

संत वनखण्डी जी का जीवन एक ऐसी ज्योति है, जो आज भी भक्तों के हृदय में आध्यात्मिक प्रकाश फैलाता है। उदासीन संप्रदाय के महान संतों में उनकी गिनती आचार्य श्रीचंद्र जी की परंपरा के एक तेजस्वी सितारे के रूप में होती है। उनका जीवन सत्य, शांति और प्रेम का संदेश देता है, जिसने न केवल सिन्ध प्रांत को, बल्कि पूरे भारत को आध्यात्मिकता की राह दिखाई। उनकी तपस्या, भक्ति और ज्ञान ने सनातन धर्म की मर्यादा को अक्षुण्ण रखा और असंख्य जीवों को भवसागर से पार करने का मार्ग प्रशस्त किया।

प्रारंभिक जीवन: एक दिव्य बालक का जन्म

विक्रम संवत की उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में, कुरुक्षेत्र के पवित्र नगर में गौड़ ब्राह्मण रामचंद्र और उनकी धर्मपत्नी मनोरमा देवी रहते थे। दोनों ही सात्विक और धर्मनिष्ठ थे। उनका मन सदा साधु-संतों की सेवा में रमता था। उस समय उत्तर भारत में उदासीन संप्रदाय के मंडलेश्वर साधु मेलाराम जी सौ साधुओं के साथ भगवद्भक्ति का प्रचार करते हुए भ्रमण कर रहे थे। एक बार वे कुरुक्षेत्र आए। उनके आशीर्वाद से मनोरमा देवी ने चैत शुक्ल सप्तमी, संवत् 1820 में एक तेजस्वी बालक को जन्म दिया, जिसका नाम भालचंद्र रखा गया। यही बालक आगे चलकर संत वनखण्डी के नाम से विश्वविख्यात हुए।

भालचंद्र बचपन से ही गंभीर और शांत स्वभाव के थे। उन्हें एकांत में रहना पसंद था। माता-पिता को चिंता थी कि कहीं उनका पुत्र सन्यासी न बन जाए। लेकिन नियति ने कुछ और ही तय किया था। माता-पिता ने मेलाराम जी से वचन दिया था कि वे अपनी पहली संतान उन्हें सौंप देंगे। जब भालचंद्र दस वर्ष के हुए, तब माता-पिता ने हृदय कठोर कर उन्हें मेलाराम जी को सौंप दिया, जो उस समय पटियाला के फुलैली ग्राम में थे। मेलाराम जी ने भालचंद्र को दीक्षा देकर उनका नाम वनखण्डी रखा। इस तरह, मात्र दस वर्ष की आयु में वे उदासीन संप्रदाय में दीक्षित हो गए।

तपस्या और गुरु भक्ति: वैराग्य की राह

संत वनखण्डी जन्मजात उदासीन थे। सांसारिक सुख और संबंधों में उनकी रत्ती भर भी रुचि नहीं थी। गुरु मेलाराम जी की देखरेख में उन्होंने योगाभ्यास शुरू किया और धीरे-धीरे योगिक सिद्धियों पर अधिकार प्राप्त कर लिया। एक बार पटियाला के महाराजा अमर सिंह फुलैली के जंगल में शिकार खेलते हुए मेलाराम जी के दर्शन को आए। वहां उन्होंने ग्यारह वर्षीय बाल योगी वनखण्डी को देखा। उनके सौंदर्य और तेजस्वी मुखमंडल से प्रभावित होकर महाराजा ने उन्हें अपने राजमहल ले जाने की इच्छा जताई। गुरु की आज्ञा से वनखण्डी महाराज राजमहल गए, लेकिन उनका मन वहां नहीं रमा। रानियों ने उन्हें रोकना चाहा, पर संध्या होते ही वे राजमहल से निकलकर एक वृक्ष के नीचे समाधिस्थ हो गए। यह देखकर महाराजा स्वयं उन्हें मेलाराम जी के आश्रम वापस ले गए। इस घटना से गुरु मेलाराम जी अत्यंत प्रसन्न हुए और वनखण्डी जी का वैराग्य और दृढ़ निश्चय और भी प्रबल हो गया।

तीर्थाटन: पवित्र यात्राओं का सिलसिला

गुरु की आज्ञा से संत वनखण्डी ने सोलह वर्ष की आयु में तीर्थयात्रा शुरू की। उन्होंने हरिद्वार, मथुरा, अयोध्या, प्रयाग, काशी, नेपाल, वैद्यनाथ, गंगा सागर, कामाख्या, जगन्नाथ, द्वारिका और रामेश्वर जैसे पवित्र तीर्थों की यात्रा की। साढ़े तीन वर्ष तक चली इस यात्रा में उन्होंने योग-साधना का गहन अभ्यास किया। दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान मदुरा में उन्हें एक विचित्र स्थिति का सामना करना पड़ा। वहां के मंदिर में नरबलि की प्रथा थी, और कई साधु-संतों व स्त्रियों को बंदी बनाकर उनकी बलि दी जानी थी। वनखण्डी जी ने अपनी योग-शक्ति से बंदीगृह के दरवाजे खोलकर सभी को मुक्त कर दिया। इस चमत्कार से प्रभावित होकर मदुरा के राजा ने नरबलि बंद करने का वचन दिया।

यात्रा समाप्त कर वे बंबई पहुंचे और वहां अपनी धूनी जलाकर साधुवेला तीर्थ की स्थापना की। इसके बाद वे सिन्ध प्रांत के ठट्ठा नगर गए और आचार्य श्रीचंद्र की धूनी को प्रणाम किया। सिन्ध में साधुवेला तीर्थ को उन्होंने ऐसी पवित्रता और दिव्यता से परिपूर्ण किया कि वह स्थान काशी के समान पूजनीय बन गया। साधु-संतों का समागम, सत्संग, दान, हरिकथा और कीर्तन से वहां का कण-कण भक्ति-भाव से सराबोर हो उठा।

लगभग तीन वर्ष तक साधुवेला में तप करने के बाद, उन्होंने पुनः तीर्थयात्रा शुरू की और अमरनाथ जाकर शिवलिंग के दर्शन किए। इसके बाद वे साधुवेला लौट आए और वहां तप, साधना और सत्संग में लीन हो गए।

सनातन धर्म का संरक्षण: एक ऐतिहासिक योगदान

संत वनखण्डी का प्राकट्य उस समय हुआ, जब भारत की राजनीतिक स्थिति अस्थिर थी। यूरोपीय शक्तियों का आगमन शुरू हो चुका था, और नादिरशाह व अहमदशाह अब्दाली के आक्रमणों ने भारतीय राजशक्ति को कमजोर कर दिया था। पानीपत की तीसरी लड़ाई में भारत की पराजय हो चुकी थी, और अंग्रेज भारत को अपने नियंत्रण में लेने की चाल चल रहे थे। सिन्ध प्रांत पर भी उनकी नजर थी। ऐसे कठिन समय में संत वनखण्डी ने सत्य, शांति और प्रेम का संदेश फैलाया। उन्होंने लोगों को आत्मनिर्भरता और आध्यात्मिकता का पाठ पढ़ाया, जिससे सनातन धर्म का गौरव बढ़ा।

उन्होंने सच्चिदानंद स्वरूप परमात्मा की भक्ति का संकल्प लिया और भगवान की कृपा से उसे साकार किया। उनकी तपस्या और भक्ति ने न केवल सिन्ध, बल्कि पूरे भारत में सनातन धर्म का मस्तक ऊंचा किया। देश उनके चरणों में नत हुआ और उनकी आध्यात्मिक शक्ति का लोहा माना।

अमर रचनाएँ और उपदेश: भक्ति का अमृत

संत वनखण्डी जी की रचनाएँ उनके वचन और उपदेश हैं, जो आज भी भक्तों के लिए अमृत समान हैं। उन्होंने सनातन वैदिक धर्म को सर्वोपरि माना और कहा कि वेद परमेश्वर की आज्ञा हैं। वेदों के अनुसार आचरण करने से मुक्ति मिलती है। उनकी वाणी में गहरा आध्यात्मिक ज्ञान था। कुछ प्रमुख उपदेश इस प्रकार हैं:

गुरु भक्ति: "गुरुप्रसाद सुने जब ज्ञान, गुरु प्रसाद मिटे अज्ञान। गुरुप्रसाद शास्त्र को सार, 'वनखण्डी' गुरु कृपा आधार।" वे मानते थे कि गुरु की कृपा से ही अज्ञान मिटता है और ज्ञान की प्राप्ति होती है।

हरि और जगत की एकता: "हरी जगत है, जगत हरि, हरि जग को नहि भेद। जो जानै यह ज्ञान तिहि 'वनखण्डी' नहि खेद।" वे कहते थे कि भगवान और जगत एक हैं, इस रहस्य को जानने वाला कभी दुखी या भयभीत नहीं होता।

आत्मसाक्षात्कार: "स्वस्वरूप को भूल के, भजो आप यह जीव। जब जाने मै भिन्न नहि, 'वनखण्डी' यह शिव।" आत्मसाक्षात्कार को उन्होंने साधना का अंतिम लक्ष्य बताया।

रामनाम की महिमा: "जो जन बोलै राम हरे, 'वनखण्डी' संसृति से तरे।" रामनाम को उन्होंने मंत्रराज कहा, जो जीव को संसार सागर से पार करता है।

संत और ईश्वर की एकता: "संत ईस के नित अवतार, करे सग होवे भवपार। संत ईस में भेद न माने, 'वनखण्डी' भेद हि को भाने।" वे संतों को ईश्वर का अवतार मानते थे।

इन उपदेशों में उनकी गहरी आध्यात्मिक दृष्टि और भक्ति का सार निहित है। वे आत्ममग्न होने और सहज समाधि को मोक्ष का मार्ग मानते थे।

साधुवेला तीर्थ और अंग्रेजों का चमत्कार

सिन्ध विजय के बाद अंग्रेज अधिकारी फ्रैंक विल्स साधुवेला तीर्थ की सुंदरता से मोहित हो गया। वह वहां अपना बंगला बनवाना चाहता था और उसने आश्रम को नष्ट करने का प्रयास किया। लेकिन हर रात एक अदृश्य शक्ति उसके काम को नष्ट कर देती थी। जब उसने संत वनखण्डी को द्वीप से निकालने का आदेश दिया, तो वे अंतर्धान हो गए। उसी रात विल्स को असहनीय पेट दर्द हुआ। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने नतमस्तक होकर क्षमा मांगी। उसने साधुवेला तीर्थ को संत वनखण्डी को सदा के लिए सौंप दिया।

अंतिम समय और जल समाधि

संत वनखण्डी देखने में सदा किशोर जैसे लगते थे। वे चोगा, लंबा टोपा और योगगुदड़ी धारण करते थे। जीवन के अंतिम दिनों में वे साधुवेला तीर्थ में ही रहे, जहां वे योग, सत्संग और तप में लीन रहे। संवत् 1920 में आषाढ़ कृष्ण द्वितीया को रात दो बजे, 'शिवोऽहम्' का उच्चारण करते हुए उन्होंने महाप्रयाण किया। सिन्धु नदी में उन्हें जल समाधि दी गई। उस समय असंख्य भक्त और साधु उपस्थित थे।

अमर प्रेरणा

संत वनखण्डी जी का जीवन एक तपस्वी, भक्त और सनातन धर्म के संरक्षक का जीवंत उदाहरण है। उनकी तपस्या, गुरु भक्ति और उपदेश आज भी हमें सत्य, शांति और प्रेम की राह दिखाते हैं। साधुवेला तीर्थ उनकी पवित्र स्मृति का प्रतीक है, जो भक्तों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। उनके वचन और रचनाएँ हमें याद दिलाती हैं कि रामनाम और गुरु कृपा ही जीवन का सार हैं।

गूगल का नया बदलाव

सौ परिणामों की सुविधा खत्म, सर्च की दुनिया में हलचल

इंटरनेट आज हमारी जिंदगी का हिस्सा है। सुबह उठते ही फोन उठाया और कुछ ढूंढना हो, तो गूगल सबसे पहले याद आता है। चाहे वह खाना बनाने की विधि हो, नई नौकरी की जानकारी हो या कोई और सवाल, गूगल जवाब देता है। लेकिन अगस्त 2025 के अंत में गूगल ने एक पुरानी सुविधा को चुपके से हटा दिया। यह था 'num=100' नाम का एक सर्वर-साइड सेटिंग। इसके जरिए एक ही पेज पर सौ सर्च परिणाम देखे जा सकते थे। अब यह सुविधा खत्म हो चुकी है। अब हर पेज पर सिर्फ दस परिणाम दिखते हैं, और बाकी के लिए अगले पेज पर जाना पड़ता है। यह बदलाव छोटा-सा लग सकता है, लेकिन इसने सर्च की दुनिया में बड़ा असर डाला है। वेबसाइट चलाने वाले परेशान हैं, और सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन (एसईओ) करने वाले तो और भी चिंतित हैं। आखिर गूगल ने ऐसा क्यों किया? इसका असर किस पर पड़ेगा?

सौ परिणामों का जादू क्यों गायब हुआ?

पहले समझते हैं कि यह 'num=100' सेटिंग थी क्या। जब आप गूगल पर कुछ सर्च करते, जैसे 'सबसे अच्छा लैपटॉप 2025', तो पहले पेज पर दस परिणाम दिखते। लेकिन अगर आप सर्च यूआरएल में '&num=100' जोड़ देते, तो एक ही पेज पर सौ वेबसाइट्स दिखाई देतीं। यह सुविधा सालों से थी। 2018 में गूगल ने इसे अपने इंटरफेस से हटा दिया था, लेकिन तकनीकी लोग इसे यूआरएल में जोड़कर इस्तेमाल करते रहे। एसईओ विशेषज्ञ और डेटा इकट्ठा करने वाले इस सुविधा का खूब उपयोग करते। वे ऐसे टूल बनाते, जो एक बार में सौ परिणाम खींच लेते। इससे रिसर्च करना आसान हो जाता।

लेकिन सितंबर 2025 में, लगभग 18 सितंबर के आसपास, गूगल ने इसे पूरी तरह बंद कर दिया। गूगल का कहना है कि यह सेटिंग कभी भी आधिकारिक नहीं थी। कोई बड़ा ऐलान नहीं हुआ, बस चुपके से सुविधा हट गई। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि गूगल ने यह कदम डेटा स्क्रैपिंग रोकने के लिए उठाया। स्क्रैपिंग का मतलब है कि कुछ स्वचालित प्रोग्राम (बॉट्स) गूगल से ढेर सारा डेटा खींचते थे। कुछ लोग कहते हैं कि ओपनएआई जैसी कंपनियां, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) पर काम करती हैं, इसका इस्तेमाल करती थीं। लेकिन गूगल ने इसकी कोई साफ वजह नहीं बताई।

यह बदलाव हमें सोचने पर मजबूर करता है। गूगल अपनी सर्च प्रक्रिया को और नियंत्रित करना चाहता है। वह चाहता है कि यूजर्स को सिर्फ सबसे अच्छे दस परिणाम दिखें। लेकिन क्या यह सही है? पहले यह सुविधा मुफ्त थी, और लोग इसका फायदा उठाते थे। अब पेज बार-बार पलटने पड़ते हैं, जिससे समय लगता है। छोटे व्यवसायों, जो सस्ते टूल्स का इस्तेमाल करते थे, को अब दिक्कत हो रही है। एक तरफ गूगल कहता है कि यह अनौपचारिक सेटिंग थी, लेकिन दूसरी तरफ लाखों लोग इसके भरोसे काम कर रहे थे। यह हमें याद दिलाता है कि तकनीक कितनी तेजी से बदलती है। जो आज काम करता है, वह कल बंद हो सकता है। क्या इससे सर्च की गुणवत्ता बढ़ेगी, या गूगल बस अपनी ताकत बढ़ा रहा है? यह सवाल अभी अनसुलझा है।

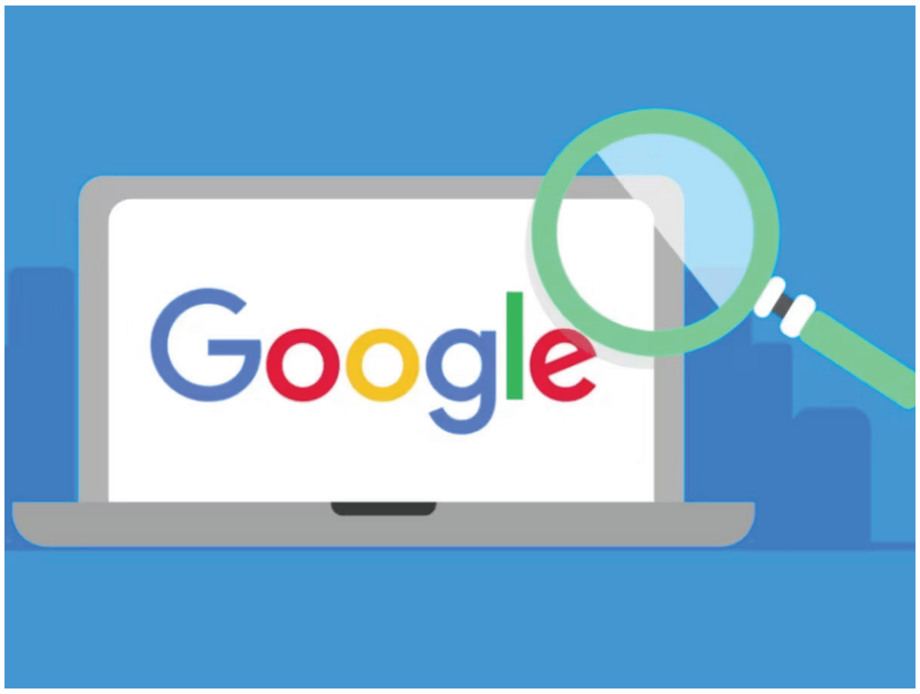

डेटा की दुनिया में उलटफेर: इम्प्रेशंस और रैंकिंग पर असर

इस बदलाव का सबसे बड़ा असर गूगल सर्च कंसोल पर पड़ा। यह गूगल का एक मुफ्त टूल है, जो वेबसाइट मालिकों को बताता है कि उनकी साइट सर्च में कितनी बार दिख रही है। सितंबर 2025 के पहले हफ्ते से सर्च कंसोल में इम्प्रेशंस (दिखने की संख्या) में भारी गिरावट देखी गई। एक अध्ययन में 319 वेबसाइट्स को जांचा गया। इसमें 87.7 प्रतिशत वेबसाइट्स में इम्प्रेशंस कम हो गए, खासकर डेस्कटॉप सर्च में। ऐसा क्यों? पहले स्क्रैपिंग टूल्स 'num=100' का इस्तेमाल करके सौ परिणाम खींचते थे। इससे इम्प्रेशंस की संख्या बढ़ जाती थी। अब सिर्फ दस परिणाम गिने जाते हैं, तो इम्प्रेशंस कम हो गए।

उदाहरण से समझें। मान लीजिए, आपकी वेबसाइट तीसरे पेज पर रैंक करती थी। पहले स्क्रैपिंग टूल्स उसे गिन लेते। अब नहीं। एक अध्ययन के मुताबिक, 77.6 प्रतिशत वेबसाइट्स में कीवर्ड्स की संख्या कम हो गई। खासकर छोटे कीवर्ड्स (जैसे 'लैपटॉप') और मध्यम कीवर्ड्स (जैसे 'सस्ता लैपटॉप 2025') पर असर पड़ा। लेकिन औसत रैंकिंग (एवरेज पोजिशन) ऊपर चढ़ गई। ऐसा इसलिए, क्योंकि निचली रैंकिंग्स अब गिनी ही नहीं जा रही। यह डेटा धोखे जैसा लगता है। रैंकिंग बेहतर दिख रही है, लेकिन असल में डेटा अधूरा है।

यह जानकारी ब्राइट वेसल जैसे विशेषज्ञों ने साझा की। उन्होंने कहा कि यह बदलाव एसईओ टूल्स को बुरी तरह प्रभावित कर रहा है। सेमरश और अहेफ्स जैसे बड़े प्लेटफॉर्म्स ने बयान जारी किए। वे कहते हैं कि डेटा में गड़बड़ी है, लेकिन वे इसे ठीक करने की कोशिश कर रहे हैं। छोटे टूल्स वालों की मुश्किलें बढ़ गईं। पहले एक रिक्वेस्ट से सौ परिणाम मिलते, अब दस रिक्वेस्ट चाहिए। इससे समय और सर्वर का खर्च बढ़ गया। लागत दस गुना हो सकती है।

लेकिन इस सिक्के का दूसरा पहलू भी है। पहले इम्प्रेशंस में बॉट्स का डेटा शामिल होता था, जो असली नहीं था। अब क्लिक-थ्रू रेट (सीटीआर) ज्यादा सटीक होगा। वेबसाइट मालिकों को साफ पता चलेगा कि पहले पेज पर कितना ट्रैफिक आ रहा है। इससे लंबे कीवर्ड्स (लॉन्ग-टेल) पर ध्यान बढ़ेगा। अध्ययन दिखाते हैं कि 95 प्रतिशत लोग पहले पेज से आगे नहीं जाते। तो गूगल का तर्क समझ आता है कि सौ परिणाम दिखाने की जरूरत नहीं। लेकिन क्या यह डेटा को और बंद कर देगा? क्या ओपन वेब कमजोर होगा? यह सवाल उठते हैं। छोटे ब्लॉगर्स को नुकसान ज्यादा लगता है, लेकिन शायद यह बदलाव नई रणनीतियां लाए।

एसईओ की दुनिया में भूचाल: टूल्स और बजट पर संकट

एसईओ विशेषज्ञों के लिए, यह बदलाव किसी बड़े झटके से कम नहीं। ये लोग वेबसाइट्स को सर्च में ऊपर लाने का काम करते हैं। उनके टूल्स 'num=100' पर निर्भर थे। अब एक्यूरैंकर और एसईओमॉनिटर जैसे प्लेटफॉर्म्स कहते हैं कि वे टॉप 20 परिणाम रोज जांचेंगे, बाकी हफ्ते में दो बार। लेकिन यह महंगा पड़ेगा। टूल्स की सब्सक्रिप्शन फीस बढ़ सकती है। क्लाइंट्स सवाल करेंगे कि रैंकिंग्स क्यों गिरीं। विशेषज्ञों को समझाना पड़ेगा कि यह गूगल का बदलाव है, न कि उनकी गलती।

उदाहरण लें। एक छोटी कंपनी एसईओ सर्विस लेती थी। पहले उनकी रिपोर्ट में 500 कीवर्ड्स दिखते। अब 300। क्लाइंट नाराज। लेकिन विशेषज्ञ कहते हैं कि पहले का डेटा फुलाया हुआ था। अब असली टॉप 10 पर ध्यान दो। यह बदलाव आसान नहीं। रेडिट और एक्स पर लोग परेशान हैं। वे कहते हैं कि लागत बढ़ रही है, और काम की गति कम हो रही है। लेकिन कुछ लोग इसे अच्छा मानते हैं। उनका कहना है कि अब डेटा साफ है, और असली परिणामों पर काम होगा।

दोनों पक्ष देखें। एक तरफ, यह बदलाव परेशानी लाया। लाखों डॉलर्स का नुकसान हुआ। टूल्स को फिर से बनाना पड़ रहा है। दूसरी तरफ, यह एक मौका है। अब एसईओ विशेषज्ञ सिर्फ रैंकिंग्स के पीछे नहीं भागेंगे। वे कंटेंट की गुणवत्ता और यूजर अनुभव पर ध्यान देंगे। गूगल के एआई ओवरव्यूज और जेमिनी जैसे नए फीचर्स पर काम करेंगे। इंटेरो डिजिटल जैसी एजेंसियां कहती हैं कि अब 'सर्च एवरीवेयर ऑप्टिमाइजेशन' अपनाओ। यानी सिर्फ गूगल नहीं, चैटजीपीटी और पर्प्लेक्सिटी जैसे प्लेटफॉर्म्स पर भी ध्यान दो।

यह बदलाव हमें सोचने पर मजबूर करता है। एसईओ इंडस्ट्री कितनी टूल्स पर निर्भर है? क्या यह बदलाव इसे मजबूत बनाएगा? छोटे फ्रीलांसर्स को ज्यादा दिक्कत होगी। बड़ी एजेंसियां शायद जल्दी एडजस्ट कर लें। लेकिन यह एक सबक है। तकनीक बदलती है, और हमें भी बदलना होगा। क्लाइंट्स को साफ बताओ कि यह इंडस्ट्री का बदलाव है। डरने की जरूरत नहीं। ध्यान सेशंस और कन्वर्जन्स जैसे जरूरी मेट्रिक्स पर ले जाओ। इससे बिजनेस को ज्यादा फायदा होगा।

भविष्य की राह: चुनौतियां, मौके और नई शुरुआत

आगे क्या होगा? गूगल ने यह साफ नहीं कहा कि यह बदलाव स्थायी है या अस्थायी। लेकिन लगता है कि यह रहने वाला है। अब एसईओ में नई रणनीतियां चाहिए। टॉप 10 या 20 परिणामों पर ध्यान दो। लॉन्ग-टेल कीवर्ड्स पर काम करो, जो बहुत विशिष्ट हों। कंटेंट क्लस्टर्स बनाओ, यानी एक टॉपिक पर कई लेख। एआई टूल्स से नए कीवर्ड्स ढूंढो। रेडिट और यूट्यूब से ट्रेंड्स समझो।

चुनौतियां हैं। लागत बढ़ेगी। छोटे व्यवसाय पीछे छूट सकते हैं। डेटा की सटीकता पर सवाल उठेंगे। लेकिन मौके भी हैं। साफ डेटा से बेहतर फैसले लिए जा सकते हैं। जेनरेटिव इंजन ऑप्टिमाइजेशन (जीईओ) सीखो, ताकि एआई सर्च में भी दिखो। रासे फ्रेमवर्क अपनाओ – रिलेवेंट, अथॉरिटेटिव, स्ट्रक्चर्ड, एक्सपीरियंस। इससे चैटजीपीटी जैसे प्लेटफॉर्म्स पर भी मौका मिलेगा।

यह बदलाव सर्च की दुनिया को नया आकार देगा। गूगल ज्यादा नियंत्रित होगा। यूजर्स को शायद बेहतर कंटेंट मिले। निचली रैंकिंग्स पर फेक ट्रैफिक कम होगा। इंडस्ट्री इसे अपनाएगी। नए टूल्स आएंगे। लेकिन हमें स्मार्ट होना होगा। सिर्फ नंबर नहीं, वैल्यू पर ध्यान दो। अगर आप वेबसाइट मालिक हैं, तो सर्च कंसोल डेटा को औसत गिरावट के हिसाब से देखें। कीवर्ड्स रीसेट करें। टॉप यूआरएल्स पर फोकस करें। अगर आप एसईओ विशेषज्ञ हैं, तो क्लाइंट्स को साफ समझाएं। ऐसे पार्टनर्स चुनें, जो अपडेट्स फॉलो करते हों। यह एक नया मोड़ है। इसे मौके में बदलो।

बदलाव को अपनाएं, नई राह बनाएं

गूगल का यह छोटा-सा बदलाव गहरा असर डाल रहा है। 'num=100' गया, लेकिन सोच बदल गई। इम्प्रेशंस कम हुए, लेकिन असली वैल्यू बढ़ी। एसईओ वाले नई रणनीतियां बनाएंगे। वेबसाइट्स बेहतर होंगी। यह हमें बताता है कि डिजिटल दुनिया रुकती नहीं। बदलाव आते रहेंगे। हमें लचीला होना होगा। गूगल का यह कदम सही हो सकता है यूजर अनुभव के लिए। लेकिन पारदर्शिता की कमी सोचने वाली बात है। भविष्य में एआई सर्च हावी होगा। उसके नियम नए होंगे। तैयार रहें। सर्च सिर्फ टूल्स नहीं, रचनात्मकता है। इसे अपनाएं, तो जीत आपकी होगी।

पाठ से होता है तन, मन, धन की समस्याओं का निवारण

मेरा जन्म राजस्थान में हुआ है। मैं चाहता हूं कि मेरी इस मातृभूमि में कोई भी व्यक्ति तन, मन और धन की समस्याओं से पीड़ित न हो। मैं बहुत गरीबी और दुखों में रहा हूं। मनुष्य का यदि तन ठीक न हो तो धन का अर्जन नहीं हो सकता। यदि धन नहीं है तो तन का कोई लाभ नहीं है। तन ठीक न हो और मन भी ठीक न हो तो धन का भी कोई उपयोग नहीं हो सकता। अस्तु तन, मन और धन तीनों का ठीक होना बहुत जरूरी है। इसके साथ-साथ यदि तत्वों का भी ज्ञान हो जाए तो पूर्णता आ जाती है। ज्ञान के आने के बाद अंधेरा हट जाता है। जैसे सूर्य के आते ही अंधेरा भाग जाता है।

रोगों का मूल है यूटीआई और निवारण दैवव्यपाश्रय का मिरेकल वंडर वाश

यहां इतने रोग हैं, कष्ट हैं जिनका डाक्टरों के पास कोई इलाज नहीं है। फंगल, बैक्टीरिया, वायरल के कारणों से लाइलाज रोग हो गए हैं। विशेष रूप से महिलाओं में इतने रोग हैं कि जिनके कारण उनका जीवन दूभर हो रहा है। यूटीआई की विभीषिका ने सभी के जीवन को ग्रसित कर रखा है। एक साल की बच्ची से लेकर सौ साल की महिला तक अनेक रोगों से पीड़ित हैं। यूटीआई के होने में अर्थराइटिस, त्वचा रोग, लीवर, किडनी, बीपी, माइग्रेन, उदर रोग जैसे अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। दैवव्यपाश्रय के दिव्य अमृत मिरेकल वंडर वाश के उपयोग करने से कुछ ही सेकेंडों में रोग निवारण हो जाता है। यह औषधि पवित्र नदियों का अभिमंत्रित औषधीय जल है जिसमें कोई केमिकल नहीं है और इसके कोई साइड इफेक्ट भी नहीं होते जबकि एलोपैथिक दवाइयों के साइड इफेक्ट होते हैं जिससे एक रोग ठीक होता है तो दूसरा रोग पैदा हो जाता है।

दुर्गा मां ही करती हैं सृजन, पालन और संहार

दुर्गा मां ही इस सृष्टि की सृजन, पालन और संहार करने वाली हैं। भगवान ब्रह्मा ने मां दुर्गा की स्तुति करते हुए कहा कि हे मां, आप सृष्टि के प्रारंभ में सृजन करती हो तत्पश्चात पालन करती हो और कालान्तर में संहार भी आप ही करती हो। हे मां आपकी कृपा से ही मैं, विष्णु और शिव सृजन, पालन और संहार के कार्य को मूर्तरूप देते हैं। अथर्व वेद में सभी देवताओं को मां दुर्गा ने कहा कि मैं ब्रह्म हूं और अब्रह्म भी हूं। मैंने सूरज, चन्द्रमा, तारे, आकाश, पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि सभी को बनाया है। मैं शाश्वत रूप से ऊपर-नीचे, अगल-बगल सभी जगह पर हूं। मैंने ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश का सृजन किया है। विद्या-अविद्या, अजा-अनजा सब कुछ मैं ही हूं। मां दुर्गा का पाठ करने वाला इस संसार में यश-कीर्ति, धन-संपदा, संतान आदि को प्राप्त करके अंत में मोक्ष को प्राप्त करता है। कृष्ण पक्ष की अष्टमी और चतुर्दशी को यदि कोई साधक अपना सब कुछ मां दुर्गा के चरणों में समर्पित करके ग्रहण करता है तो उसे माता की प्रसन्नता व कृपा प्राप्त होती है।

समागम में श्री जतिन शर्मा वशिष्ठ जी ने कहा कि जब भी राजस्थान की भूमि पर हमारा आना हुआ है, अलग ही कृपा का आलोक हमें मिला है। जब हम श्री करणपुर गए तो वहां की जनता का अटूट प्रेम हमें मिला। जयपुर गए तो वहां की संगत से अनायास ही बहुत सारा प्रेम हमें मिला। आज पहली बार जोधपुर की भूमि पर आया हूं जो राजस्थान में है और हमारे गुरुदेव जी भी राजस्थान से ही हैं तो यह भूमि हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। गुरु गीता में वर्णन है कि जो गुरु है वही शिव है और आज सावन की तरह बहुत तेज बारिश हुई है। यह इस बात का प्रमाण है कि शिव के रूप में साक्षात गुरु हमारे बीच में हैं। आज हमारा सावन है और आज ही सारे त्यौहार हैं। जिस भूमि पर गुरु जी आते हैं उसके सारे कष्ट खत्म हो जाते हैं और अनायास ही प्रभु की कृपा होती है जो हमें पता नहीं चलता कि किस तरह से वह कृपा का आशीर्वाद मिला है। आगे आने वाले समय में यहां की जमीनों की इतनी वैल्यू होगी कि आप कल्पना नहीं कर सकते। आप देखना कि किस तरह से बढ़ती जाएगी और आपका जोधपुर सबसे मंहगा हो जाएगा। आज आपके समक्ष यहां पर आना हुआ, मैं बहुत सौभाग्यशाली हूं। आप सबका प्रेम मिला उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। गुरु जी और गुरु मां जी के चरणों में यही प्रार्थना है कि हम इसी प्रकार सेवा करते रहें। और अगर कोई गलती हमसे हो रही है या अचानक कुछ ऐसा होता है जिसका हमें ज्ञान न हो उसके लिए क्षमा करें। हम गुरु जी के चरणों के सेवक हैं तो कभी गलती भी हो सकती है। मेरी यही प्रार्थना है कि गुरु जी हमें ऐसे ही अपनी सेवा में रखें।

अर्पण से ही होती है प्राप्ति

भगवान कहते हैं कि सारे धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ जाओ मैं तुम्हें पापों से तत्क्षण मुक्त कर दूंगा। विषय यह है कि तत्क्षण मुक्ति कैसे मिलती है। यह अपने को भगवान के चरणों में अर्पण करने से मिलती है। अर्थात तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा। हे प्रभु तू ही मेरा स्वामी है, सब कुछ तेरा है। हमने बोल तो दिया लेकिन अर्पण तो किया ही नहीं। अर्पण कैसे किया जाता है, यह पता ही नहीं है। भगवान इसे कैसे स्वीकार करेंगे कि हम तत्क्षण पापों से मुक्त हो जाएंगे। पलक झपकते ही कैसे पापों से मुक्त हो जाएंगे, यह जानना जरूरी है। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि सूरज का प्रकाश भी भौतिक है। वास्तव में यह अंधेरा ही है। चांद, सूरज, तारों का जो प्रकाश दिखाई देता है वह भी अपरा प्रकृति है। इसको जानने के लिए तत्ववेत्ता की शरण आवश्यक है।

दुर्गा पूजा और दशहरा

भारत की सांस्कृतिक धरोहर

भारत में दुर्गा पूजा और दशहरा उन प्रमुख त्योहारों में से हैं, जो न केवल धार्मिक महत्व रखते हैं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक एकता को भी बढ़ावा देते हैं। इन उत्सवों का आधार अच्छाई की बुराई पर विजय की भावना है, जो हमें एकजुट होने और अपनी परंपराओं को सहेजने का अवसर प्रदान करता है। इस वर्ष 2025 में, दुर्गा पूजा का आयोजन सितंबर 27 से अक्टूबर 2 तक हुआ, जिसमें देश भर में उत्साह की लहर देखने को मिली। दशहरा, जो अक्टूबर 2 को गांधी जयंती के साथ मनाया गया, रामायण की कथा के माध्यम से सत्य और धर्म की जीत का संदेश देता है। विशेष रूप से पश्चिम बंगाल में कोलकाता जैसे शहरों में बड़े-बड़े पंडाल सजाए गए, जहां लाखों लोग मां दुर्गा की पूजा करने और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लेने के लिए एकत्र हुए। हालांकि, कुछ स्थानों पर बारिश और छोटे-मोटे विवादों ने उत्सव को प्रभावित किया, फिर भी लोगों का जोश कम नहीं हुआ। ये त्योहार हमें यह विचार करने पर मजबूर करते हैं कि क्या हम इनके पीछे छिपे गहरे संदेश को समझ पाते हैं, या केवल उत्सव की चमक-दमक में खो जाते हैं।

दुर्गा पूजा में नवरात्रि के नौ दिन मां दुर्गा के अलग-अलग रूपों की पूजा की जाती है, जैसे शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी और सिद्धिदात्री। अंत में विजयादशमी के दिन मूर्तियों का विसर्जन होता है, जो भावनात्मक और आध्यात्मिक अनुभव होता है। दूसरी ओर, दशहरा भगवान राम द्वारा रावण पर विजय की कहानी को जीवंत करता है, जो हमें सिखाता है कि सत्य और नैतिकता अंततः जीत हासिल करते हैं। इस वर्ष गांधी जयंती के साथ इन त्योहारों का मेल एक विशेष संदेश लेकर आया, जिसमें भक्ति के साथ-साथ सामाजिक जिम्मेदारी को भी याद किया गया। भारत के विभिन्न हिस्सों में ये उत्सव अलग-अलग रूपों में मनाए गए। दक्षिण भारत में आयुध पूजा का आयोजन हुआ, तो पूर्वोत्तर में असम और त्रिपुरा में दुर्गा पूजा की धूम रही। उत्तर भारत में रामलीला और रावण दहन हुए, जबकि पश्चिम में गुजरात और राजस्थान में गरबा और डांडिया की रंगत देखने को मिली। यह विविधता भारत की सांस्कृतिक ताकत को दर्शाती है, लेकिन यह भी सवाल उठता है कि क्या हम इन उत्सवों से मिलने वाली सीख को अपने जीवन में उतारते हैं, या केवल उत्साह में बह जाते हैं।

देश भर में उत्सवों की रौनक और रंग

2025 में दुर्गा पूजा और दशहरा पूरे भारत में भव्यता के साथ मनाए गए। पश्चिम बंगाल में कोलकाता का उत्सव विशेष रूप से चर्चा में रहा, जहां सितंबर 30 से अक्टूबर 2 तक पंडालों में लाखों लोग उमड़े। संतोष मित्रा स्क्वायर जैसे पंडालों में देशभक्ति थीम पर सजावट की गई, जिसने लोगों का ध्यान खींचा। ढाक की थाप, धुनुची नृत्य और सिंदूर खेला ने उत्सव को और जीवंत बनाया। अक्टूबर 2 को मूर्तियों के विसर्जन के साथ यह उत्सव समाप्त हुआ, लेकिन कुछ स्थानों पर चुनौतियां भी सामने आईं। उदाहरण के लिए, ओडिशा के कटक में दो समूहों

के बीच संगीत को लेकर विवाद हुआ, जिसमें पत्थरबाजी के कारण डीसीपी सहित कुछ लोग घायल हुए और 6 लोगों को गिरफ्तार किया गया। यह घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि त्योहारों को शांति और भाईचारे के साथ मनाने की आवश्यकता है।

दिल्ली में भी दुर्गा पूजा और दशहरा उत्साह के साथ मनाए गए, लेकिन भारी बारिश ने रावण दहन जैसे कार्यक्रमों को प्रभावित किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के कार्यक्रम रद्द होने के बावजूद, लोगों ने घरों में पूजा और उत्सव जारी रखा। मुंबई में बॉलीवुड सितारों ने दुर्गा पूजा में हिस्सा लिया। काजोल, आलिया भट्ट और अजय देवगन जैसे सितारे पंडालों में नजर आए, जिसने युवाओं को आकर्षित किया। दक्षिण भारत में मैसूर के दशहरा जुलूस ने दुनिया भर का ध्यान खींचा, जहां हाथी पर सजी देवी चामुंडेश्वरी की शोभा यात्रा निकली। तेलंगाना में बतुकम्मा उत्सव में महिलाओं ने फूलों के साथ नृत्य किया, तो असम और त्रिपुरा में कार्निवल आयोजित हुए। नागालैंड के कोहिमा में विसर्जन के बाद सफाई अभियान चलाया गया, जो पर्यावरण के प्रति जागरूकता का एक सकारात्मक उदाहरण है। गुजरात में गरबा की रातें रंगीन रहीं, और राजस्थान से बिहार तक उत्सव की धूम देखी गई। यह विविधता भारत की एकता को दर्शाती है, लेकिन क्षेत्रीय विवादों से बचने की आवश्यकता भी सामने आती है। क्या हम इन उत्सवों को और समावेशी बना सकते हैं? यह विचार करने योग्य है।

लंदन में भी दुर्गा पूजा का आयोजन हुआ, जिसे यूरोप का सबसे बड़ा आयोजन कहा गया। यूनेस्को ने इसे सांस्कृतिक धरोहर का दर्जा दिया है, जो भारत की कला और परंपरा को वैश्विक मंच पर ले जाता है। यह हमें गर्व का अनुभव कराता है, लेकिन साथ ही अपनी जड़ों को मजबूत करने की जिम्मेदारी भी देता है।

नेताओं और सितारों की भागीदारी

इस वर्ष के उत्सवों में कई प्रमुख हस्तियों की

भागीदारी देखने को मिली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली में रावण दहन में हिस्सा लेने की योजना बनाई थी, लेकिन बारिश के कारण यह संभव नहीं हुआ। फिर भी, उन्होंने सोशल मीडिया के माध्यम से देशवासियों को शुभकामनाएं दीं और अच्छाई की जीत का संदेश दिया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने दिल्ली के मदन दास पार्क में आयोजित पूजा में हिस्सा लिया और सिंदूर खेला की परंपरा को महिलाओं की ताकत का प्रतीक बताया। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कोलकाता में दुर्गा पूजा कार्निवल का नेतृत्व किया, जिसमें 113 पूजा समितियों ने हिस्सा लिया। रेड रोड पर आयोजित इस कार्निवल में ढाक की धुन और नृत्य ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। ममता ने प्रशासन और आयोजकों को धन्यवाद दिया, क्योंकि इस आयोजन ने लाखों पर्यटकों को आकर्षित किया।

बीजेपी ने संतोष मित्रा स्क्वायर में देशभक्ति थीम पर पंडाल सजाया, जिसका उद्घाटन अमित शाह ने किया। यह पंडाल ऑपरेशन सिंदूर की थीम पर आधारित था, जिसने लोगों का ध्यान खींचा। हालांकि, कुछ लोग इसे राजनीति और धर्म का मिश्रण मानते हैं, जो एक विचारणीय मुद्दा है। त्रिपुरा में उज्जयंता पैलेस के पास कार्निवल आयोजित हुआ, जिसमें युवा लड़कियों ने उत्साह से भाग लिया। बॉलीवुड में भी उत्सव की धूम रही। आलिया भट्ट, रानी मुखर्जी और मौनी रॉय जैसे सितारे पंडालों में नजर आए, जिसने युवाओं को प्रेरित किया। लेकिन यह सवाल उठता है कि क्या यह केवल दिखावा है, या सच्ची भक्ति का हिस्सा है। यूएन न्यूज में दुर्गा पूजा को सामाजिक बदलाव और समावेशिता के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया, जो वैश्विक स्तर पर भारत की सांस्कृतिक ताकत को रेखांकित करता है।

सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व

दुर्गा पूजा और दशहरा केवल धार्मिक आयोजन नहीं हैं, बल्कि ये हमारी सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखते हैं। पंडालों में कारीगरों की कला, मूर्तियों की सजावट और लाइटिंग का प्रदर्शन होता है, जो हमारी परंपराओं को दर्शाता है। ये उत्सव पर्यटन को बढ़ावा देते हैं और हस्तशिल्प उद्योग को प्रोत्साहन देते हैं। कोलकाता में लाखों पर्यटक आए, जिससे होटल और स्थानीय दुकानें आर्थिक रूप से लाभान्वित हुईं। कारीगरों और कलाकारों को रोजगार मिला, लेकिन यह सवाल महत्वपूर्ण है कि क्या यह लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुंचता है। दशहरा में रामलीला का आयोजन पीढ़ियों को जोड़ता है और नैतिक मूल्यों को सिखाता है। लेकिन आधुनिक समय में इन कहानियों की प्रासंगिकता पर विचार करना जरूरी है।

महिलाओं की भूमिका इन उत्सवों में महत्वपूर्ण रही। सिंदूर खेला और कन्या पूजन जैसे आयोजन नारी शक्ति को दर्शाते हैं। लेकिन वास्तविक जीवन में क्या हम महिलाओं को उतना सम्मान देते हैं? पर्यावरण भी एक बड़ा मुद्दा है। मूर्तियों के विसर्जन से नदियां प्रदूषित होती हैं। इको-फ्रेंडली मूर्तियों का उपयोग बढ़ाना होगा। यूनेस्को ने 2021 में दुर्गा पूजा को सांस्कृतिक धरोहर का दर्जा दिया, जो हमारी कला और परंपराओं को वैश्विक पहचान देता है। लेकिन हमें इसे संरक्षित करने की जिम्मेदारी भी लेनी होगी।

चुनौतियां और भविष्य की दिशा

हर त्योहार में कुछ चुनौतियां आती हैं। 2025 में दिल्ली में बारिश ने रावण दहन को प्रभावित किया, लेकिन लोगों ने हिम्मत नहीं हारी। कटक में झगड़े जैसी घटनाएं दुखद रहीं, जो हमें शांति बनाए रखने की सीख देती हैं। कोविड के बाद यह पहला मौका था, जब लोग इतने बड़े पैमाने पर बाहर निकले। लेकिन भीड़ और ट्रैफिक प्रबंधन जैसे मुद्दों पर ध्यान देना होगा। आर्थिक असमानता भी एक चुनौती है। बड़े पंडाल अमीरों के लिए होते हैं, जबकि गरीब छोटे आयोजनों तक सीमित रहते हैं। सामुदायिक पूजा इस दूरी को कम कर सकती है। पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए कोहिमा जैसे सफाई अभियानों को अपनाना होगा।

सोशल मीडिया ने त्योहारों को वैश्विक मंच दिया। लोग फोटो और वीडियो शेयर करते हैं, लेकिन असली अनुभव को जीना अलग है। हमें वास्तविक और डिजिटल दुनिया में संतुलन बनाना होगा। ये त्योहार हमें एकता, सम्मान और जिम्मेदारी सिखाते हैं। 2025 का उत्सव यादगार रहा, लेकिन अगले साल इसे और बेहतर बनाने की जिम्मेदारी हमारी है। मां दुर्गा का आशीर्वाद हमें सही रास्ता दिखाए। जय माता दी।

अब कन्फर्म टिकट की तारीख बदलना होगा आसान, नहीं कटेगा पैसा

जनवरी 2026 से लागू होगा नया नियम, रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने दी जानकारी

@ सौम्या चौबे

रेल यात्रियों के लिए बड़ी राहत की खबर है। अब अगर आपके सफर की योजना अचानक बदल जाए तो आपको अपना कन्फर्म ट्रेन टिकट कैंसिल कराने की जरूरत नहीं पड़ेगी। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने 7 अक्टूबर दिए एक इंटरव्यू में बताया कि जनवरी 2026 से यात्री अपनी कन्फर्म टिकट की यात्रा की तारीख को ऑनलाइन बदल सकेंगे।हालांकि, नई तारीख पर सीट की उपलब्धता के आधार पर ही टिकट कन्फर्म होगा, यानी इसकी कोई गारंटी नहीं होगी। लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि इस प्रोसेस में यात्रियों का पैसा कटेगा नहीं और री-बुकिंग बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के होगी।

अगर आपके पास 20 नवंबर को दिल्ली से पटना की कन्फर्म टिकट है और आपकी यात्रा 5 दिन आगे बढ़ जाती है, तो अब आपको नया टिकट लेने की जरूरत नहीं। आप IRCTC वेबसाइट या ऐप पर जाकर उसी टिकट में 25 नवंबर की तारीख डाल सकेंगे।अगर उस दिन के लिए ट्रेन में सीट उपलब्ध है, तो आपका टिकट नए डेट पर शिफ्ट हो जाएगा और आपको कोई रिफंड या री-बुकिंग चार्ज नहीं देना होगा।

फिलहाल क्या है मौजूदा व्यवस्था?

अभी तक की टिकट बुकिंग व्यवस्था काफी जटिल और महंगी रही है। यदि किसी कारणवश यात्री को अपनी यात्रा की तारीख बदलनी होती है, तो उसे अपना पुराना टिकट कैंसिल कराकर नया टिकट ताजा बुकिंग के तहत लेना पड़ता है।

इसमें न सिर्फ समय लगता है, बल्कि कैंसिलेशन चार्ज भी कटता है। नीचे जानिए कितनी कटौती होती है:

AC फर्स्ट क्लास/एग्जीक्यूटिव क्लास – 240 + GST

AC 2 टियर/फर्स्ट क्लास – 200 + GST

AC 3 टियर/AC चेयर कार/AC 3 इकोनॉमी – 180 + GST

स्लीपर क्लास – 120

सेकेंड क्लास – 60

ध्यान दें कि अगर चार्ट बन चुका हो, तो कोई रिफंड नहीं मिलता।

कब से लागू होगा नया नियम

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने जानकारी दी है कि यह नया टिकट रीबुकिंग सिस्टम जनवरी 2026 से IRCTC वेबसाइट और ऐप पर शुरू कर दिया जाएगा।

रेलवे का कहना है कि यह बदलाव यात्रियों की सुविधा और संतुष्टि को बढ़ाने के लिए किया जा रहा है।

कन्फर्म टिकट की तारीख बदल सकेंगे

रेलवे की नई सुविधा में टिकट कन्फर्म होने के बाद

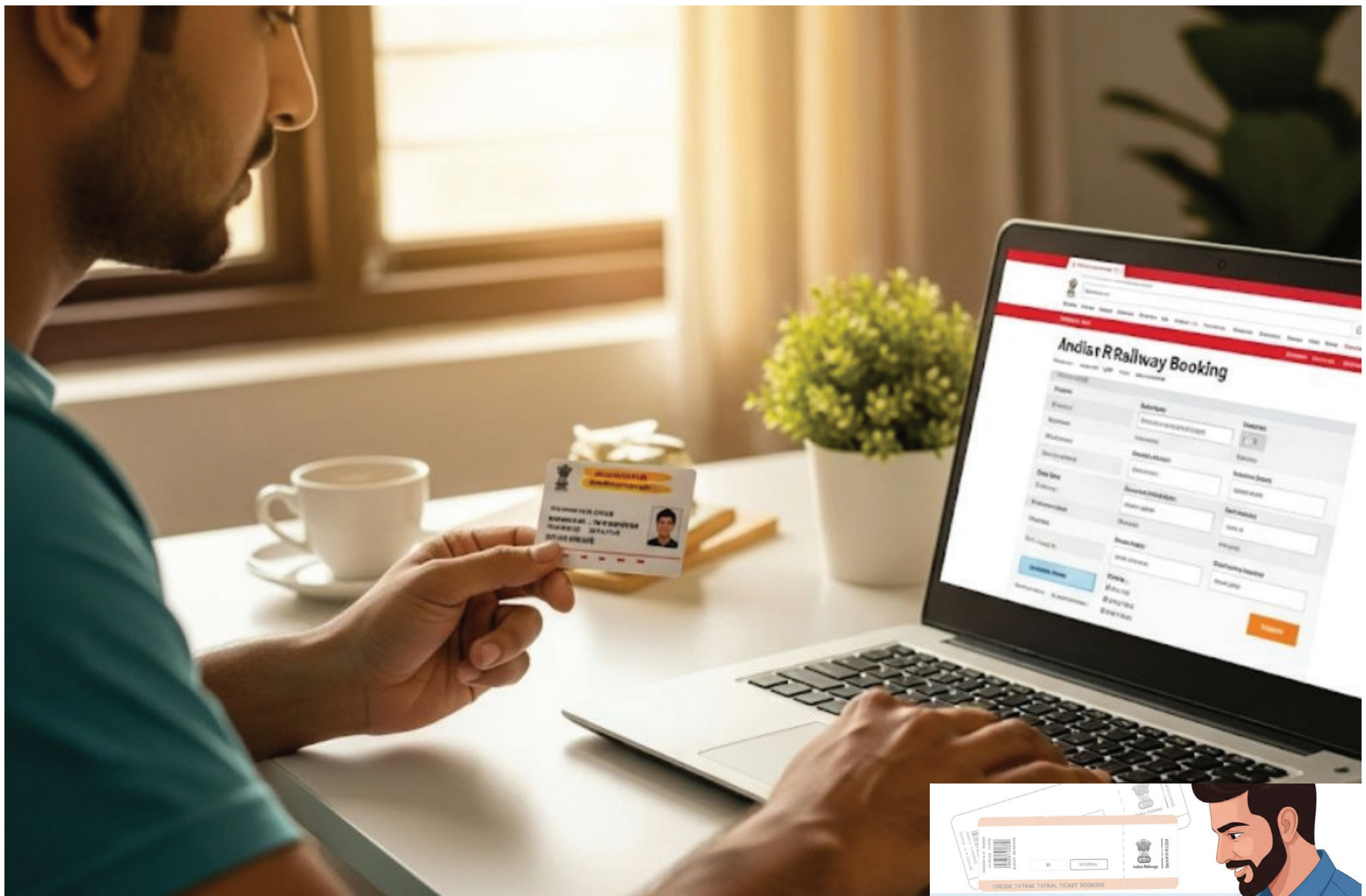

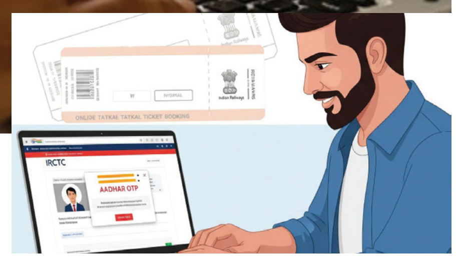

यात्रियों को रीबुकिंग का ऑप्शन मिलेगा। यह प्रक्रिया पूरी तरह डिजिटल होगी। इसमें यात्री:

IRCTC ऐप या वेबसाइट पर लॉगिन करेंगे

अपनी मौजूदा टिकट चुनेंगे

उसी ट्रेन के लिए नई तारीख सेलेक्ट करेंगे

नई तारीख पर सीट की उपलब्धता चेक करेंगे

सीट होने पर बिना किसी शुल्क के नया टिकट मिलेगा

यानी कन्फर्म टिकट की तारीख को आगे बढ़ाना उतना ही आसान होगा जितना फ्लाइट री-शेड्यूल करना।

रेलवे काउंटर से भी तारीख बदल सकेंगे

फिलहाल यह सुविधा केवल ऑनलाइन माध्यमों जैसे IRCTC की वेबसाइट और मोबाइल ऐप पर ही उपलब्ध होगी। रेल मंत्रालय ने अभी ऑफलाइन यानी रेलवे टिकट काउंटर से तारीख बदलने के विकल्प पर कोई जानकारी नहीं दी है। हालांकि, भविष्य में रेलवे इसे काउंटर बुकिंग से जोड़ सकता है।

क्या वेटिंग टिकट पर भी तारीख बदली जा सकेगी?

इस नए नियम का लाभ केवल कन्फर्म टिकट धारकों को ही मिलेगा। रेलवे ने स्पष्ट किया है कि वेटिंग टिकट पर यह सुविधा नहीं दी जाएगी।वेटिंग टिकट की तारीख बदलने के लिए अभी तक कोई नई व्यवस्था की घोषणा नहीं हुई है।

क्या नई तारीख पर कन्फर्म सीट मिलेगी?

नई व्यवस्था में यात्री कन्फर्म टिकट को नई तारीख पर शिफ्ट कर सकते हैं, लेकिन सीट की गारंटी नहीं होगी।नई तारीख पर सीट की उपलब्धता के अनुसार ही बुकिंग होगी। यदि किराए में फर्क हुआ, तो अतिरिक्त राशि यात्री को चुकानी पड़ेगी। हालांकि, कैंसिलेशन चार्ज नहीं लिया जाएगा।

कैसे होगा आम यात्रियों को फायदा?

इस सुविधा से हर साल लाखों यात्रियों को राहत मिलेगी, जिन्हें अचानक यात्रा स्थगित करनी पड़ती है। अभी तक वे अपना कन्फर्म टिकट कैंसिल कराते थे और चार्ज के साथ नया टिकट बुक करते थे। नया सिस्टम यात्रियों को पैसा बचाने का मौका देगा ,अधिक फ्लेक्सिबल यात्रा प्लानिंग देगा।

1 अक्टूबर से जनरल टिकट पर भी आधार वेरिफिकेशन अनिवार्य

रेलवे ने हाल ही में टिकट बुकिंग में पारदर्शिता और फर्जीवाड़ा रोकने के लिए एक और बड़ा कदम उठाया है।अब 1 अक्टूबर 2025 से जनरल रिजर्वेशन टिकट (सामान्य आरक्षण) की बुकिंग के शुरुआती 15 मिनट में टिकट बुक करने के लिए ई-आधार वेरिफिकेशन अनिवार्य कर दिया गया है।इसका उद्देश्य है एजेंटों द्वारा की जा रही कालाबाजारी पर रोक लगाना मैं और बॉट्स के जरिए हो रही बुकिंग पर नियंत्रण लगाना और असली यात्रियों को प्राथमिकता देना है।रेल मंत्रालय के अनुसार, इस व्यवस्था से टिकट बुकिंग में पारदर्शिता आएगी और असली यात्रियों को अधिक मौके मिलेंगे।

सिस्टम को डिजिटल और लचीला बना रही है रेलवे

रेलवे की यह नई पहल यात्रियों के हित में है और टिकट बुकिंग सिस्टम को और भी डिजिटल और लचीला बना रही है। यह भारत के सबसे बड़े परिवहन नेटवर्क को स्मार्ट और आधुनिक बनाने की दिशा में एक और बड़ा कदम है।जनवरी 2026 के बाद से अब आप अपनी रेल यात्रा की योजना में बदलाव करने के लिए बार-बार काउंटर भागने या भारी चार्ज देने से बच सकेंगे।

चेन्नई पावर प्लांट हादसा

प्रवासी मजदूरों की अनसुनी कहानी

सितंबर में चेन्नई के पास एनोर में एक निर्माणाधीन पावर प्लांट में एक दुखद हादसा हुआ, जिसने पूरे देश का ध्यान खींचा। एक स्टील आर्क ढह गया और नौ प्रवासी मजदूरों की जान चली गई, जो असम से आए थे। यह घटना केवल एक त्रासदी नहीं, बल्कि उन लाखों मजदूरों की जिंदगी का आईना है, जो अपने परिवारों के लिए बेहतर भविष्य की उम्मीद में दूर-दराज के शहरों में काम करने आते हैं।

हादसे की वो मनहूस शाम: सब कुछ कैसे बिखर गया

चेन्नई के उत्तर में पोंनेरी के पास एनोर स्पेशल इकोनॉमिक जोन में 1320 मेगावाट का थर्मल पावर प्रोजेक्ट बन रहा था। इस प्रोजेक्ट का जिम्मा भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (बीएचईएल) और तमिलनाडु जनरेशन एंड डिस्ट्रीब्यूशन कॉर्पोरेशन (टैंगडको) के पास था। उस दिन, 30 सितंबर को, मजदूर 30 फीट की ऊंचाई पर एक कंक्रीट आर्क पर स्टील का ढांचा जोड़ रहे थे। शाम का समय था, और अचानक एक जोरदार धमाका हुआ। स्टील का ढांचा ढह गया, और उसके साथ ही नौ मजदूर नीचे गिर पड़े। वहां मौजूद अन्य मजदूरों ने तुरंत मदद की कोशिश की, लेकिन धूल और मलबे के बीच कुछ भी साफ नहीं दिख रहा था। एम्बुलेंस और बचाव दल जल्दी पहुंचे, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। नौ मजदूरों ने अस्पताल पहुंचने से पहले ही दम तोड़ दिया, और एक घायल मजदूर अभी भी अस्पताल में जिंदगी और मौत के बीच जूझ रहा है।

यह हादसा उस जगह हुआ, जहां सैकड़ों मजदूर दिन-रात काम करते हैं। ज्यादातर मजदूर बाहर के राज्यों से हैं, जो अपने परिवारों के लिए पैसे कमाने की उम्मीद में यहां आते हैं। एक मजदूर ने बाद में बताया कि सब कुछ इतनी तेजी से हुआ कि किसी को कुछ समझने का मौका ही नहीं मिला। उसने कहा कि आर्क के ढहने की आवाज इतनी जोरदार थी कि लगा जैसे आसमान ही टूट पड़ा हो। पुलिस ने तुरंत साइट को सील कर दिया और जांच शुरू कर दी। लेकिन सवाल यह है कि क्या इस हादसे को रोका जा सकता था? क्या स्टील का ढांचा मजबूत था? क्या मजदूरों को ऊंचाई पर काम करने की पूरी ट्रेनिंग दी गई थी? क्या उनके पास जरूरी सुरक्षा उपकरण थे? ये सवाल आज भी अनुत्तरित हैं। यह हादसा हमें याद दिलाता है कि ऊर्जा सुरक्षा और बुनियादी ढांचे के प्रोजेक्ट्स जितने जरूरी हैं, उतनी ही जरूरी है वहां काम करने वाले मजदूरों की जिंदगी।

नौ जिंदगियां: सपनों का अधूरा सफर

जिन नौ मजदूरों की जान गई, वे सभी असम के करबी आंगलॉन्ग और होजाओ जिलों से थे। उनके नाम थेः मुन्ना केमप्राई, सोरबोजित थॉसन, फाइबिट फंगलू, बिदायुम पोरबोसा, पाबन सोरॉन्ग, प्रायांतो सोरॉन्ग, सुमन खारिकाप, डिमाराज थॉसन और दीपक राइजुंग। इनमें से कुछ के नामों में थोड़ी भिन्नता हो सकती है, लेकिन उनके परिवारों का दर्द एक जैसा है। ये मजदूर अपने परिवारों के

लिए कमाने वाले थे। कोई अपने बेटे की पढ़ाई के लिए पैसे जमा कर रहा था, तो कोई अपनी बेटी की शादी के लिए। लेकिन इस हादसे ने उनके सारे सपने चकनाचूर कर दिए।

असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने तमिलनाडु सरकार से संपर्क किया और वादा किया कि शवों को जल्द से जल्द उनके गांव पहुंचाया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि पीड़ित परिवारों को हर संभव मदद दी जाएगी। लेकिन सोचिए, इन परिवारों का क्या होगा? एक मजदूर की मां अब अपने बेटे के बिना कैसे जिएगी? एक पिता अपनी बेटी की शादी कैसे करेगा? ये मजदूर चेन्नई इसलिए आए थे, क्योंकि असम में काम की कमी थी। दक्षिण भारत में बड़े-बड़े प्रोजेक्ट्स चल रहे हैं, और मजदूरों की जरूरत है। लेकिन क्या हम कभी उनकी जिंदगी के बारे में सोचते हैं? वे सुबह 6 बजे काम शुरू करते हैं और रात 8 बजे तक काम करते हैं। बीच में थोड़ा खाना और आराम। लेकिन ऊंचाई पर काम करना हमेशा जोखिम भरा होता है।

यह हादसा प्रवासी मजदूरों की जिंदगी की सच्चाई को सामने लाता है। भारत में करीब 40 करोड़ प्रवासी मजदूर हैं, जो देश की अर्थव्यवस्था को चलाते हैं। लेकिन उनकी अपनी जिंदगी कैसी है? अस्थायी आवास, सस्ता खाना, और स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव। एक रिपोर्ट के अनुसार, 2024 में प्राकृतिक आपदाओं से 54 लाख लोग बेघर हुए, और निर्माण साइट्स पर काम करने वाले मजदूरों को सबसे ज्यादा खतरा रहता है। उनके बच्चे भी प्रभावित होते हैं। माता-पिता काम पर होते हैं, और बच्चे अकेले रह जाते हैं। कभी बीमार पड़ते हैं, तो कभी हादसों का शिकार। यह चक्र तब तक चलता रहेगा, जब तक हम इसे तोड़ने की कोशिश नहीं करेंगे।

मुआवजा और सहायता: क्या यह काफी है?

हादसे के कुछ ही घंटों बाद सरकार ने मदद की घोषणा कर दी। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने हर मृतक के परिवार को 10 लाख रुपये देने का ऐलान किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी प्रधानमंत्री नेशनल रिलीफ फंड से प्रत्येक परिवार को 2 लाख रुपये और घायल मजदूर को 50 हजार रुपये देने की घोषणा की। बीएचईएल ने शवों को हवाई जहाज से असम भेजने का जिम्मा लिया, और असम सरकार ने रिश्तेदारों के आने-जाने का खर्च उठाने का वादा किया। टैंगडको के चेयरमैन जे राधाकृष्णन अस्पताल पहुंचे और घायल मजदूर से मुलाकात की।

लेकिन सवाल यह है कि क्या यह मुआवजा काफी है? 10 लाख रुपये एक परिवार को कुछ समय के लिए राहत दे सकते हैं, लेकिन क्या वे उस मजदूर की जगह ले सकते हैं, जो परिवार का इकलौता कमाने वाला था? कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया मार्क्स (सीपीआईएम) ने मुआवजे को 20 लाख रुपये करने की मांग की और ठेकेदारों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की बात कही। मजदूर संगठनों ने अस्पताल के बाहर प्रदर्शन किया और सुरक्षा नियमों को और सख्त करने की मांग की। एक मजदूर ने कहा कि मुआवजा तो ठीक है, लेकिन अगर सही समय पर सेफ्टी चेक होता, तो शायद यह हादसा ही न होता।

सहायता सिर्फ पैसे की नहीं, बल्कि भावनात्मक और सामाजिक भी होनी चाहिए। असम से आए रिश्तेदारों ने चेन्नई के स्टैनली मेडिकल कॉलेज में अपने प्रियजनों के शव देखे और रो पड़े। डॉक्टरों ने बताया कि ज्यादातर मजदूरों को सिर और छाती में गंभीर चोटें आई थीं। एक घायल मजदूर अभी भी वेंटिलेटर पर है। यह सब देखकर लगता है कि मुआवजा एक शुरुआत है, लेकिन असल बदलाव तब आएगा, जब हम मजदूरों की सुरक्षा को प्राथमिकता देंगे।

जांच का रास्ता: सच्चाई कब सामने आएगी?

हादसे के अगले दिन, 1 अक्टूबर को, पुलिस ने ठेकेदारों के खिलाफ केस दर्ज किया और तीन लोगों को गिरफ्तार किया। अवादी पुलिस कमिश्नरेट ने जांच शुरू की, और बीएचईएल के साथ फॉरेंसिक टीम ने साइट का निरीक्षण किया। लेकिन अभी तक कोई ठोस नतीजा नहीं निकला है। क्या स्टील का ढांचा कमजोर था? क्या डिजाइन में कोई गलती थी? या फिर काम की जल्दबाजी में सुरक्षा नियमों को नजरअंदाज किया गया? ये सवाल हर किसी के मन में हैं।

मजदूरों का कहना है कि हेलमेट तो थे, लेकिन नियमित चेकिंग नहीं होती थी। ऊंचाई पर काम के लिए सेफ्टी नेट की व्यवस्था भी शायद नहीं थी। कटूर पुलिस ने साइट को सील कर दिया है, और स्ट्रक्चरल इंस्पेक्शन की प्रक्रिया चल रही है। लेकिन जांच में देरी हो रही है, और मजदूर संगठन मांग कर रहे हैं कि जांच पारदर्शी हो और उसकी रिपोर्ट सार्वजनिक की जाए। सीपीआईएम ने यह भी कहा कि मजदूरों की सुरक्षा के लिए सख्त कानून बनाए जाएं और हर महीने सेफ्टी ऑडिट अनिवार्य हो।

यह समस्या सिर्फ एनोर की नहीं, बल्कि पूरे देश की है। 2025 में ही कई हादसे हुए हैं। फरवरी में नागर में एक होटल का सेलर ढह गया, जिसमें तीन मजदूर मरे। उसकी जांच का क्या हुआ? कोई नहीं जानता। एक अध्ययन के अनुसार, प्रवासी मजदूरों को सबसे ज्यादा खतरा होता है, क्योंकि उन्हें न तो पूरी ट्रेनिंग मिलती है और न ही भाषा की वजह से सही निर्देश समझ आते हैं। अगर हम चाहते हैं कि ऐसे हादसे न हों, तो हमें सुरक्षा नियमों को लागू करना होगा और ठेकेदारों को जवाबदेह बनाना होगा।

प्रवासी मजदूरों की पुकार: बदलाव की जरूरत

यह हादसा हमें प्रवासी मजदूरों की जिंदगी पर फिर से सोचने के लिए मजबूर करता है। भारत में 40 करोड़ से ज्यादा प्रवासी मजदूर हैं, जो देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। लेकिन उनकी अपनी जिंदगी कैसी है? अस्थायी झोपड़ियां, खराब खाना, और स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव। 2025 में क्लाइमेट रिस्क बढ़ने से बाढ़ और तूफानों ने लाखों मजदूरों को प्रभावित किया। कंस्ट्रक्शन वर्कर्स फेडरेशन ने अप्रैल में एक कैंपेन चलाया था, जिसमें बेहतर आवास, स्वास्थ्य जांच और सुरक्षा की मांग की गई थी।

एनोर हादसे के बाद मजदूर संगठनों की आवाज और बुलंद हुई है। वे कहते हैं कि ठेकेदारों पर सख्त सजा हो, और मजदूरों के लिए बेहतर नीतियां बनें। ऊर्जा प्रोजेक्ट्स देश के लिए जरूरी हैं, लेकिन क्या मजदूरों की जिंदगी की कीमत पर? अगर उस दिन सेफ्टी नेट होता, ट्रेनिंग दी गई होती, तो शायद नौ परिवार आज अपने अपनों के साथ होते। यह हादसा हमें सोचने पर मजबूर करता है कि विकास का असली मतलब क्या है। क्या यह सिर्फ इमारतें और बिजली संयंत्र बनाना है, या फिर उन लोगों की जिंदगी को सुरक्षित करना है, जो इन्हें बनाते हैं?

अंतिम शब्द: एक नई शुरुआत की उम्मीद

एनोर का हादसा एक त्रासदी है, लेकिन यह एक मौका भी है। मौका यह सोचने का कि हम अपने मजदूरों के लिए क्या कर सकते हैं। उनकी सुरक्षा, उनका सम्मान, और उनका भविष्य हमारी जिम्मेदारी है। यह लेख उन नौ मजदूरों की याद में है, जो अपने परिवारों के लिए सपने लेकर चेन्नई आए थे, लेकिन वापस नहीं लौट सके। उम्मीद है कि यह हादसा हमें जागने के लिए मजबूर करेगा। कि हम एक ऐसा भारत बनाएंगे, जहां हर मजदूर सुरक्षित हो, और हर परिवार के सपने पूरे हों।

हाथ ख़ाली हैं तिरे शहर से जाते जाते
जान होती तो मिरी जान लुटाते जाते

अब तो हर हाथ का पत्थर हमें पहचानता है
उम्र गुज़री है तिरे शहर में आते जाते

अब के मायूस हुआ यारों को रुख़्सत कर के
जा रहे थे तो कोई ज़ख़्म लगाते जाते

रेंगने की भी इजाज़त नहीं हम को वर्ना
हम जिधर जाते नए फूल खिलाते जाते

मैं तो जलते हुए सहराओं का इक पत्थर था
तुम तो दरिया थे मिरी प्यास बुझाते जाते

मुझ को रोने का सलीक़ा भी नहीं है शायद
लोग हँसते हैं मुझे देख के आते जाते

हम से पहले भी मुसाफ़िर कई गुज़रे होंगे
कम से कम राह के पत्थर तो हटाते जाते

राहत इंदौरी
लोकप्रिय शायर और फ़िल्म गीतकार

कमाल देखिए

सियासत की गहरी चाल देखिए
कभी तीर, कभी शमशीर, ढाल देखिए
वही मसीहा, सितमगर भी है वही
उन की रहमदिली का कमाल देखिए
होगा ये मुल्क कभी चिड़िया सोने की
अब आम आदमी को बदहाल देखिए
कर रहे हैं यूं तो हम रोज तरक्की
फिर भी मांगते हैं भीख, मिसाल देखिए
मांगते हैं हम जिंदगी से हिसाब
जिंदगी पूछती है हम से सवाल देखिए
हम ने ही उन्हें भेजा है दिल्ली भोपाल
दे रहे हैं वे हमें धक्के मजाल देखिए
माना कि हम हैं पंछी आजाद गगन के
मगर कभी शिकारी तो कभी जाल देखिए।।

रमेशचंद्र शर्मा

40 साल बाद दो चरणों में मतदान

243 सीटों पर होगा मुकाबला | 7.42 करोड़ मतदाता करेंगे अपने प्रतिनिधि का चयन | 100% वेबकास्टिंग के साथ बनेगा रिकॉर्ड | चुनावी प्रक्रिया 40 दिन में पूरी होगी

6 और 11 नवंबर को डाले जाएंगे वोट, नतीजे आएंगे 14 नवंबर को

@ शोभित यादव

बिहार विधानसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान सोमवार को चुनाव आयोग ने कर दिया। इस बार 243 सीटों वाली बिहार विधानसभा के लिए दो चरणों में मतदान होगा।पहला चरण 6 नवंबर को और दूसरा चरण 11 नवंबर को होगा।वहीं गिनती 14 नवंबर को होगी।इस तरह नामांकन से लेकर नतीजों के ऐलान तक की पूरी चुनावी प्रक्रिया कुल 40 दिनों में पूरी की जाएगी।

पहले चरण में पटना समेत 121 सीटों पर वोटिंग

पहले चरण के अंतर्गत पटना सहित बिहार की 121 विधानसभा सीटों पर वोट डाले जाएंगे। ये चरण मुख्यतः मध्य और दक्षिण बिहार के जिलों को कवर करेगा। वहीं, दूसरे चरण में 122 सीटों पर मतदान होगा, जो बिहार के उत्तरी और सीमावर्ती इलाकों नेपाल और उत्तर प्रदेश की सीमा से सटे जिलों में होंगे।

40 साल बाद सिर्फ 2 फेज में चुनाव

बिहार में आखिरी बार दो चरणों में विधानसभा चुनाव 1985 में हुए थे।

उसके बाद से अब तक हर चुनाव तीन या उससे अधिक चरणों में होता आया है।

1985: 2 चरण

2010: 61 दिन की प्रक्रिया

2015: 5 चरण, 60 दिन में पूरा चुनाव

2020: 3 चरण, 47 दिन की प्रक्रिया

2025: सिर्फ 2 चरण, 40 दिन की प्रक्रिया

इस बार चुनाव की अवधि सबसे कम रखी गई है, ताकि प्रशासनिक संसाधनों पर बोझ कम पड़े और चुनाव प्रक्रिया अधिक तेज और पारदर्शी रहे।

राजनीतिक दलों की मांग पर बदला गया फॉर्मेट

इस बार चुनाव आयोग ने दो चरणों में चुनाव कराने का निर्णय मुख्यतः राजनीतिक दलों की मांगों को ध्यान में रखकर लिया है। भाजपा और राजद ने दो चरणों में चुनाव कराने की वकालत की थी। जबकि जेडीयू ने चाहा था कि चुनाव एक ही चरण में निपटा दिया जाए।आयोग ने सुरक्षा, त्योहारों और मौसम की परिस्थितियों को देखते हुए दो चरणों का विकल्प चुना।

7.42 करोड़ मतदाता, जिनमें 14 लाख नए वोटर

बिहार के इस चुनाव में कुल 7.42 करोड़ वोटर अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे।

इनमें से 14 लाख मतदाता पहली बार वोट डालेंगे, जो युवा वर्ग की बड़ी भागीदारी को दर्शाता है। साथ ही, आयोग के आंकड़ों के अनुसार 100 वर्ष से अधिक आयु वाले 14 हजार मतदाता भी सूची में शामिल हैं।इन वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष सुविधा दी जाएगी।जो मतदाता स्वास्थ्य या उम्र की वजह से मतदान केंद्र नहीं पहुंच सकते, वे फॉर्म 12D भरकर घर से वोट डाल सकेंगे। यह प्रावधान खासतौर पर दिव्यांग और वृद्ध नागरिकों के लिए किया गया है।

90,712 मतदान केंद्र बनाए गए

निर्वाचन आयोग के मुताबिक, इस बार बिहार में कुल 90,712 मतदान केंद्र बनाए गए हैं।इनमें से 76,801 केंद्र ग्रामीण इलाकों में हैं।13,911 केंद्र शहरी क्षेत्रों में हैं।प्रत्येक मतदान केंद्र पर औसतन 818 मतदाता पंजीकृत हैं।

चुनावी पारदर्शिता का नया मानक हुआ तय

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने बताया कि इस बार सभी मतदान केंद्रों पर 100% वेबकास्टिंग की व्यवस्था की गई है।इससे चुनाव प्रक्रिया की निगरानी रीयल टाइम में होगी और किसी भी गड़बड़ी या अवैध गतिविधि को तुरंत रोका जा सकेगा।साथ ही, 1,350 मॉडल मतदान केंद्र भी बनाए जा रहे हैं, जहां मतदाताओं को बेहतर सुविधा, छाया, पेयजल, और व्हीलचेयर जैसी सुविधाएं दी जाएंगी।

चुनाव आयोग के लिए पारदर्शिता चुनौती

चुनाव आयोग के अनुसार, इस बार सुरक्षा व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

दो चरणों में चुनाव कराने से सुरक्षा बलों की तैनाती और मूवमेंट आसान रहेगा।

हर चरण में पर्याप्त संख्या में केंद्रीय अर्धसैनिक बल तैनात किए जाएंगे ताकि हिंसा, बूथ कैप्चरिंग या धनबल के इस्तेमाल जैसी घटनाओं को रोका जा सके।साथ ही, प्रत्येक जिले में विशेष निगरानी टीमें और वीडियो सर्विलांस यूनिट तैनात की जाएंगी।

हर बूथ पर महिला सुरक्षा कर्मियों की होगी मौजूदगी

इस बार आयोग का मुख्य लक्ष्य है कि चुनाव प्रक्रिया मतदाताओं के लिए अधिक सुविधाजनक, पारदर्शी और समावेशी बने। इस चुनाव में सभी मतदान केंद्रों पर रैंप और शौचालय की सुविधा होगी।प्रत्येक बूथ पर महिला सुरक्षा कर्मियों की मौजूदगी रहेगी।दिव्यांग मतदाताओं के लिए व्हीलचेयर और हेल्प डेस्क बनाया जाएगा। हर मतदान केंद्र पर सेल्फी प्वॉइंट ताकि लोग लोकतंत्र में अपनी भागीदारी दर्ज करा सकें।

लोकतंत्र के पर्व की तैयारी

बिहार विधानसभा चुनाव एक बार फिर राज्य की राजनीति का सबसे बड़ा इवेंट बनने जा रहा है। 40 साल बाद दो चरणों में होने वाला यह चुनाव न सिर्फ प्रशासनिक दक्षता की परीक्षा है, बल्कि यह भी तय करेगा कि राज्य की जनता किस दिशा में आगे बढ़ना चाहती है। चुनाव आयोग ने पारदर्शिता, तकनीक और सुरक्षा तीनों पर खास जोर देकर इसे स्मार्ट और सुरक्षित चुनाव बनाने की तैयारी कर ली है।

कटक का दर्द

दुर्गा पूजा में भाईचारे की चुनौती

कटक, ओडिशा का एक ऐतिहासिक शहर, जहां गलियों में सदियों से हिंदू और मुस्लिम समुदाय एक साथ मिलकर रहते हैं, आज तनाव की आग में झुलस रहा है। अक्टूबर महीने की चौथी तारीख को रात के समय दुर्गा पूजा की एक शोभायात्रा पर हमला हुआ, जिसने शहर की शांति को भंग कर दिया। यह घटना छोटी थी, लेकिन इसके परिणाम गंभीर हुए। पत्थरबाजी से शुरू हुआ विवाद हिंसक झड़पों में बदल गया, जिसके कारण प्रशासन को 36 घंटे का कर्फ्यू लगाना पड़ा और इंटरनेट सेवाएं एक दिन के लिए बंद करनी पड़ीं। यह सब कुछ हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि हमारे त्योहार, जो खुशी और एकता का प्रतीक होने चाहिए, कभी-कभी तनाव का कारण क्यों बन जाते हैं। कटक जैसे शहर में, जहां हर गली में विभिन्न धर्मों के लोग एक-दूसरे के साथ कंधे से कंधा मिलाकर रहते हैं, ऐसी घटनाएं न केवल दुख देती हैं, बल्कि हमें यह भी सिखाती हैं कि सामाजिक सद्भाव को बनाए रखना कितना जरूरी है। इस लेख में हम इस घटना के विभिन्न पहलुओं को समझेंगे, यह देखेंगे कि क्या हुआ, क्यों हुआ, और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए क्या किया जा सकता है।

कटक शहर की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर इसे ओडिशा का गहना बनाती है। दुर्गा पूजा यहां का सबसे बड़ा त्योहार है, जिसमें लाखों लोग शामिल होते हैं। रंग-बिरंगी मूर्तियां सजाई जाती हैं, और शोभायात्राएं निकाली जाती हैं, जो शहर की सड़कों को उत्सव के रंगों से भर देती हैं। लेकिन इस बार यह उत्सव दुखदायी बन गया। अक्टूबर की चौथी तारीख को देर रात, दर्गाह बाजार इलाके में एक शोभायात्रा गुजर रही थी, जो काठजोड़ी नदी के किनारे मूर्ति विसर्जन के लिए जा रही थी। शोभायात्रा में तेज आवाज वाला संगीत बज रहा था, जिसे लेकर कुछ स्थानीय लोगों ने आपत्ति जताई। रात का समय था, और शायद उन्हें यह परेशान करने वाला लगा। उनकी आपत्ति जल्द ही गुस्से में बदल गई, और छतों से पत्थर और कांच की बोतलें फेंकी जाने लगीं। इस हमले में कई लोग घायल हो गए, जिनमें कटक के डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस, खिलारी ऋषिकेश द्न्यंदेव भी शामिल थे। पुलिस ने तुरंत कार्रवाई की और छह लोगों को गिरफ्तार किया, लेकिन तब तक हालात बिगड़ चुके थे। लगभग चार घंटे तक 50 मूर्तियों वाली गाड़ियां रुकी रहीं, और शहर का माहौल डर और तनाव से भर गया।

यह कोई पहली घटना नहीं थी। कटक में हिंदू और मुस्लिम समुदायों की आबादी लगभग बराबर है, और दर्गाह बाजार जैसे इलाके मिश्रित बस्तियों के लिए जाने जाते हैं। यहां लोग एक-दूसरे के साथ मिलजुलकर रहते हैं, लेकिन कभी-कभी छोटी-छोटी बातें बड़े विवाद का रूप ले लेती हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि रात के समय तेज संगीत से परेशानी होती है, खासकर जब बच्चे और बुजुर्ग घरों में सो रहे हों। दूसरी ओर, शोभायात्रा में शामिल लोग उत्साह में होते हैं, और उनके लिए यह धार्मिक भावनाओं का हिस्सा है। दोनों पक्षों की बातें अपनी जगह सही लगती हैं, लेकिन हिंसा किसी भी तरह से उचित नहीं ठहराई जा सकती। यह घटना हमें यह बताती है कि अगर समय रहते संवाद हो जाए, तो शायद ऐसी स्थिति से बचा जा सकता है। पुलिस ने बाद में बताया कि संगीत की आवाज कम करने की कोशिश की गई थी, लेकिन तब तक गुस्सा भड़क चुका था। अगली सुबह से ही शहर में अफवाहें फैलने लगीं, जिसने लोगों के बीच डर और अविश्वास को और बढ़ा दिया। बाजार बंद हो गए, बच्चे स्कूल नहीं जा सके, और शहर की रोजमर्रा की जिंदगी ठप हो गई। यह छोटी सी चिंगारी अब एक बड़ी आग बनने की ओर बढ़ रही थी।

हिंसा की लहर: बाइक रैली ने बढ़ाया तनाव

अगले दिन, यानी अक्टूबर की पांचवीं तारीख को, हालात और बिगड़ गए। विश्व हिंदू परिषद ने शोभायात्रा पर हुए हमले के विरोध में एक बाइक रैली निकालने का ऐलान किया। प्रशासन ने इस रैली की इजाजत नहीं दी, क्योंकि इससे कानून-व्यवस्था बिगड़ने का खतरा था। फिर भी, रैली विद्याधरपुर इलाके से शुरू हुई और दर्गाह बाजार जैसे संवेदनशील क्षेत्रों से गुजरी। रैली में लोग जय श्री राम के नारे लगा रहे थे, जिससे माहौल और गर्म हो गया। पुलिस ने रैली को रोकने की कोशिश की, लेकिन इसके बाद झड़प शुरू हो गई। पत्थरबाजी हुई, दुकानों में आग लगा दी गई, और सीसीटीवी कैमरे तोड़ दिए गए। गौरीशंकर पार्क इलाके में आगजनी की घटनाएं हुईं, जिसमें कम से कम 25 लोग घायल हुए, जिनमें 8 पुलिसकर्मी शामिल थे। शहर एक बार फिर डर और अशांति के साये में डूब गया।

रैली के आयोजकों का कहना था कि वे सिर्फ हमले के दोषियों के खिलाफ न्याय की मांग कर रहे थे। लेकिन विरोधियों का तर्क था कि बिना अनुमति रैली निकालना गलत था, क्योंकि इससे तनाव और बढ़ा। कटक के पुलिस कमिश्नर, एस देव दत्ता सिंह, ने बताया कि रैली को रोकने के लिए भारी पुलिस बल तैनात करना पड़ा। रैपिड एक्शन फोर्स की मदद ली गई, लेकिन नुकसान को पूरी तरह रोकना संभव नहीं हुआ। दुकानदारों को भारी नुकसान हुआ, उनकी आजीविका पर संकट आ गया। एक दुकानदार ने दुखी होकर कहा कि वे सिर्फ अपना व्यापार करना चाहते हैं, और धर्म से उनका कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन अब उनकी दुकानें बंद हैं और परिवार की रोजी-रोटी खतरे में है। यह सुनकर मन विचलित हो जाता है। हिंसा किसी का भला नहीं करती, फिर भी लोग आपसी गुस्से में पड़ोसियों को ही नुकसान पहुंचा देते हैं। जो लोग कल तक एक-दूसरे के साथ हंसी-मजाक करते थे, आज एक-दूसरे को संदेह की नजर से देख रहे हैं। यह शहर की पुरानी एकता के लिए एक बड़ा खतरा है।

कटक की सड़कें अब खाली हो चुकी थीं। लोग घरों में बंद थे। सोशल मीडिया पर अफवाहें तेजी से फैल रही थीं। कुछ लोग कह रहे थे कि और हमले होने वाले हैं, तो कुछ का कहना था कि पुलिस पक्षपात कर रही है। इन अफवाहों ने माहौल को और खराब किया। विश्व हिंदू परिषद ने सोमवार को 12 घंटे के बंद का ऐलान किया, जिससे डर था कि हालात और बिगड़ सकते हैं। लेकिन प्रशासन ने समय रहते कदम उठाए, ताकि शहर को और नुकसान न हो। यह वक्त था जब कटक को शांत करने की सख्त जरूरत थी, वरना यह छोटी सी घटना बड़े दंगे का रूप ले सकती थी। भारत में पहले भी त्योहारों के दौरान ऐसी घटनाएं पूरे क्षेत्र को अशांत कर चुकी हैं। कटक को बचाना जरूरी था, क्योंकि यह शहर सिर्फ एक जगह नहीं, बल्कि भाईचारे और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है।

प्रशासन की कोशिशें: कर्फ्यू और इंटरनेट पर पाबंदी

जैसे ही हिंसा भड़की, प्रशासन ने तुरंत सख्त कदम उठाए। अक्टूबर की पांचवीं तारीख को शाम से 36 घंटे का कर्फ्यू लागू कर दिया गया, जो 13 पुलिस स्टेशन क्षेत्रों में प्रभावी रहा। दर्गाह बाजार, मंगलाबाग, और चौधरी बाजार जैसे संवेदनशील इलाकों में विशेष ध्यान दिया गया। कर्फ्यू का मतलब था कि कोई भी व्यक्ति बिना जरूरी कारण के बाहर नहीं निकल सकता। स्कूल, कॉलेज, दुकानें, और बाजार सब बंद कर दिए गए। केवल जरूरी सेवाएं, जैसे अस्पताल और दवाखाने, चालू रहे। पुलिस ने 60 प्लाटून तैनात किए, और 8 पैरामिलिट्री कंपनियों को बुलाया गया। सड़कों पर फ्लैग मार्च किए गए, ताकि लोगों में सुरक्षा का भरोसा बना रहे। डीजीपी वाई बी खुरानिया स्वयं कटक पहुंचे और साफ संदेश दिया कि शांति बनाए रखना हर हाल में जरूरी है।

इसके साथ ही, इंटरनेट सेवाओं पर भी रोक लगा दी गई। अक्टूबर की पांचवीं तारीख को शाम 7 बजे से अगले दिन शाम 7 बजे तक व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, और एक्स जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म बंद रहे। इसका कारण था अफवाहों को रोकना, क्योंकि गलत जानकारी हिंसा को और भड़का सकती थी। यह रोक कटक म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन, कटक डेवलपमेंट अथॉरिटी, और आसपास के 42 मौजा क्षेत्रों में लागू की गई। कुछ लोगों ने इंटरनेट बंद होने की शिकायत की, क्योंकि इससे ऑनलाइन पढ़ाई और व्यापार प्रभावित हुआ।

समाज का दुखः भरोसे का टूटना

इस घटना ने कटक के सामाजिक ताने-बाने को गहरा आघात पहुंचाया। दोनों समुदायों के नेताओं ने इसे दुखद बताया और शांति की अपील की। हिंदू संगठनों ने हमले की निंदा की, लेकिन साथ ही लोगों से संयम बरतने को कहा। मुस्लिम समुदाय के नेताओं ने माना कि स्थानीय लोगों का गुस्सा गलत था, लेकिन हिंसा का जवाब हिंसा नहीं हो सकता। कटक की एक मुस्लिम महिला ने अपनी पीड़ा साझा की और कहा कि उनके हिंदू पड़ोसी उनके भाई जैसे हैं। वे हर साल दुर्गा पूजा में मदद करती हैं, फिर यह झगड़ा क्यों हुआ? उनकी यह बात दिल को छू जाती है। कटक में सदियों से ऐसा भाईचारा रहा है, जहां ईद पर हिंदू मुबारकबाद देते हैं, और दीवाली पर मुस्लिम मिठाइयां बांटते हैं। इस एकता को टूटने नहीं देना चाहिए। राजनीतिक दलों ने भी इस मुद्दे पर अपनी आवाज उठाई। बीजू जनता दल की सांसद सुलता देवो ने कहा कि कटक में सभी धर्मों के लोग मिलकर रहते हैं, लेकिन सरकार कानून-व्यवस्था को संभालने में नाकाम रही है। कांग्रेस की विधायक सोफिया फिरदौस ने शहर की 500 साल पुरानी परंपरा को याद दिलाया और कहा कि इसे बचाना जरूरी है। विश्व हिंदू परिषद ने बंद का आह्वान किया और कादमरासुल इलाके में तलाशी की मांग की, ताकि दोषियों को पकड़ा जाए। सौभाग्य से, बंद के दौरान कोई हिंसा नहीं हुई, जो एक सकारात्मक संकेत है। लोग अब समझने लगे हैं कि गुस्से में हिंसा करना गलत है। लेकिन स्थानीय लोग थक चुके हैं। एक बुजुर्ग ने बताया कि बच्चे डर के मारे स्कूल नहीं जा रहे, और खेलना भूल गए हैं। दुकानदारों का नुकसान लाखों में है। कई दुकानें जल गईं। लेकिन सबसे बड़ा नुकसान भरोसे का है। जो पड़ोसी पहले एक-दूसरे के साथ हंसी-मजाक करते थे, अब एक-दूसरे को संदेह से देखते हैं। बच्चे पूछ रहे हैं कि भाईचारा क्या होता है? यह सवाल गहरा है, और इसका जवाब संवाद में छिपा है। स्कूलों, मोहल्लों, और समुदायों में बातचीत होनी चाहिए। त्योहारों से पहले कमेटियां बनें, जो आपसी सहमति बनाएं। ओडिशा सरकार ने उच्च स्तरीय जांच का वादा किया है, जो एक अच्छा कदम है। लेकिन जांच से ज्यादा जरूरी है विश्वास को फिर से बनाना। समाज यही चाहता है कि शांति लौटे, और भाईचारा फिर से मजबूत हो।

चीन का तीन घाटियां बांध

धरती की गति पर इंसान का अनोखा असर

चीन में बना तीन घाटियां बांध दुनिया का सबसे बड़ा जलाशय है। यांग्त्जे नदी पर खड़ा यह बांध इतना पानी रखता है कि बिजली बनाता है और बाढ़ को रोकता है। लेकिन नासा ने एक ऐसी बात बताई है जो हमें सोच में डाल देती है। इस बांध ने धरती के अक्ष को लगभग 2 सेंटीमीटर खिसका दिया है। साथ ही, पृथ्वी के एक दिन को 0.06 माइक्रोसेकंड कम कर दिया है। यह बदलाव इतना छोटा है कि रोजमर्रा में कोई फर्क नहीं पड़ता। फिर भी, यह दिखाता है कि इंसान की बनाई चीजें धरती को कैसे प्रभावित कर सकती हैं। आइए, इसे सरल हिंदी में समझें, जैसे कोई दोस्त कहानी सुना रहा हो।

बांध की कहानी: इंजीनियरिंग का एक चमत्कार

तीन घाटियां बांध का काम 1994 में शुरू हुआ। यह इतना बड़ा प्रोजेक्ट था कि लाखों लोगों को अपने घर छोड़ने पड़े। बांध 185 मीटर ऊंचा और 2.3 किलोमीटर लंबा है। 2008 में बनकर तैयार हुआ, तो दुनिया दंग रह गई। यह 39 अरब क्यूबिक मीटर पानी रोक सकता है। सोचिए, इतना पानी! यह बिजली बनाता है, जो 22 मिलियन घरों को रोशनी दे सकती है। चीन सरकार कहती है कि यह बाढ़ से लाखों जिंदगियां बचाता है। इसे बनाने में 27 अरब डॉलर लगे। इतना पैसा सुनकर सिर चकरा जाता है।

यह बांध सिर्फ पानी का ढेर नहीं। यह एक पूरा शहर सा है। वहां पुल हैं, दुकानें हैं, पर्यटक आते हैं। लेकिन परेशानियां भी हैं। पर्यावरण विशेषज्ञ कहते हैं कि इससे नदी का जीवन बिगड़ गया। मछलियां कम हुईं, पानी गंदा हुआ। फिर भी, चीन इसे अपनी शान मानता है। नासा के वैज्ञानिक बेंजामिन फॉन्ग चाओ ने 2005 में चेतावनी दी थी। उन्होंने कहा था कि इतना पानी जमा करने से धरती पर असर पड़ेगा। उस वक्त ज्यादा ध्यान नहीं गया। लेकिन 2025 में यह बात फिर चर्चा में है। नए अध्ययन बताते हैं कि असर साफ दिख रहा है। यह बांध इंसान की ताकत दिखाता है, लेकिन सवाल भी उठाता है – क्या हम प्रकृति की सीमा पार कर रहे हैं?

नासा की खोज: कैसे सामने आया सच

नासा के वैज्ञानिक धरती की घूर्णन गति को बहुत सटीक उपकरणों से मापते हैं। वे जीपीएस और सैटेलाइट का इस्तेमाल करते हैं। २००५ में, नासा के जेट प्रोपल्शन लेबोरेटरी ने एक रिपोर्ट दी। उसमें लिखा था कि तीन घाटियां बांध ने धरती का अक्ष २ सेंटीमीटर हिला दिया। अक्ष यानी वह काल्पनिक रेखा जो उत्तर और दक्षिण ध्रुव से गुजरती है। यह बदलाव छोटा लगता है, लेकिन वैज्ञानिकों के लिए बड़ा संदेश है।

अब दिन की लंबाई की बात। एक सामान्य दिन २४ घंटे का होता है। लेकिन यह बांध इसे थोड़ा छोटा कर रहा है। 0.0६ माइक्रोसेकंड – यानी 0.0000000६ सेकंड। यह इतना कम है कि आपकी घड़ी में फर्क नहीं दिखेगा। लेकिन समय के साथ यह मायने रखता है। नासा कहता है कि यह पानी के द्रव्यमान की वजह से है। नदी का पानी रोककर बांध में डालने से वजन भूमध्य रेखा के पास आ गया। जैसे कोई आइस स्केटर अपनी बाहें सिकोड़े, तो तेज घूमने लगे। ठीक वैसा ही।

२०२५ में यह खबर फिर सुर्खियों में आई। साइंस वेबसाइट्स ने लिखा कि यह इंसानी गतिविधि का अनोखा उदाहरण है। यह पुरानी गणना पर आधारित है, लेकिन २०२२ के जियोफिजिकल रिसर्च लेटर्स जैसे जर्नल्स बताते हैं कि असर अब भी है। यह सिर्फ थ्योरी नहीं, मापा गया सच है। जलवायु परिवर्तन और भूकंप भी ऐसा करते हैं। लेकिन यह बांध इंसान ने बनाया। यह सोचने को मजबूर करता है – हम कितने शक्तिशाली हो गए हैं।

वजन का विज्ञान: आसान शब्दों में समझें

चलो, विज्ञान को सरल करें। धरती घूमती है, जैसे बच्चा चक्कर काटे। इस घूमने को बनाए रखने के लिए संवेग का नियम काम करता है। आसान भाषा में, अगर वजन केंद्र की ओर जाए, तो घूमना तेज। बाहर की ओर, तो धीमा। तीन घाटियां बांध में 39 अरब क्यूबिक मीटर पानी जमा है। यह पानी पहले नदी में बहता था, अब रुका हुआ है। इससे वजन भूमध्य रेखा के करीब आ गया। नतीजा? घूमना तेज। दिन थोड़ा छोटा।

अक्ष का खिसकना भी इसी से। धरती थोड़ी चपटी है। बांध के पानी ने इसे और चपटा किया। ध्रुव थोड़े कम हुए, मध्य भाग फैला। यह बदलाव 2 सेंटीमीटर का। वैज्ञानिक इसे पोलर मोशन कहते हैं। नासा ने जीआरएसीई सैटेलाइट से मापा। यह सैटेलाइट वजन के बदलाव देखता है। 2003 से 2025 तक के डेटा से साफ है कि बांध का असर है।

लेकिन संतुलन देखिए। यह बदलाव छोटा है। जलवायु परिवर्तन से बर्फ पिघलने का असर इससे बड़ा। हर साल ध्रुव 10 सेंटीमीटर खिसकते हैं। भूकंप भी अक्ष हिलाते हैं। तो बांध अकेला जिम्मेदार नहीं। फिर भी, यह इंसान का पहला बड़ा प्रभाव है। अगर और बांध बने, तो क्या होगा? वैज्ञानिक चेताते हैं। डरने की जरूरत नहीं। बस, सोचने की। जैसे छोटा कदम भी बड़ा बदलाव लाए। छोटी बात, गहरा मतलब।

फायदे और नुकसान: दोनों पक्षों की कहानी

तीन घाटियां बांध के फायदे बहुत। यह बाढ़ रोकता है। 1998 की बाढ़ में 3,700 लोग मरे थे। अब ऐसा कम होता है। बिजली साफ है, कोयले से कम प्रदूषण। चीन की अर्थव्यवस्था को ताकत मिली। लेकिन नुकसान? 1.3 मिलियन लोग बेघर हुए। नदी का जीवन बिगड़ा। मछलियां गायब, मिट्टी का कटाव बढ़ा, भूस्खलन का खतरा। और अब धरती का यह असर।

दुनिया में और बांध हैं। ब्राजील का इटायपू, अमेरिका का हूवर। लेकिन तीन घाटियां सबसे बड़ा। 2025 के अध्ययन कहते हैं कि सभी जलाशयों से दिन 1.5 माइक्रोसेकंड छोटा हो गया। लेकिन सकारात्मक बात? यह हमें सावधान करता है। इंजीनियरिंग में समझदारी चाहिए। प्रकृति को पहले रखें।

भविष्य में क्या? जलवायु परिवर्तन से पानी कम हो सकता है। बांधों पर दबाव। लेकिन यह सिखाता है कि सब जुड़े हैं। एक बांध, पूरी धरती। छोटा बदलाव, बड़ा संदेश। हमारी जिम्मेदारी बढ़ी। क्या हम इसे संभाल पाएंगे? यह सवाल हर किसी के मन में उठेगा।

अंतिम विचार: धरती की किताब में हमारा पन्ना

तीन घाटियां बांध की कहानी सिर्फ बांध की नहीं। यह इंसान की ताकत और जिम्मेदारी की है। नासा का खुलासा बताता है कि हमारे छोटे फैसले ब्रह्मांड को छू सकते हैं। 0.06 माइक्रोसेकंड – हंसी जैसा। लेकिन आगे क्या? हमारी दुनिया तेज बदल रही। बांध बनाना ठीक, लेकिन सोच-समझकर। प्रकृति से सीखें, उसे न हिलाएं।

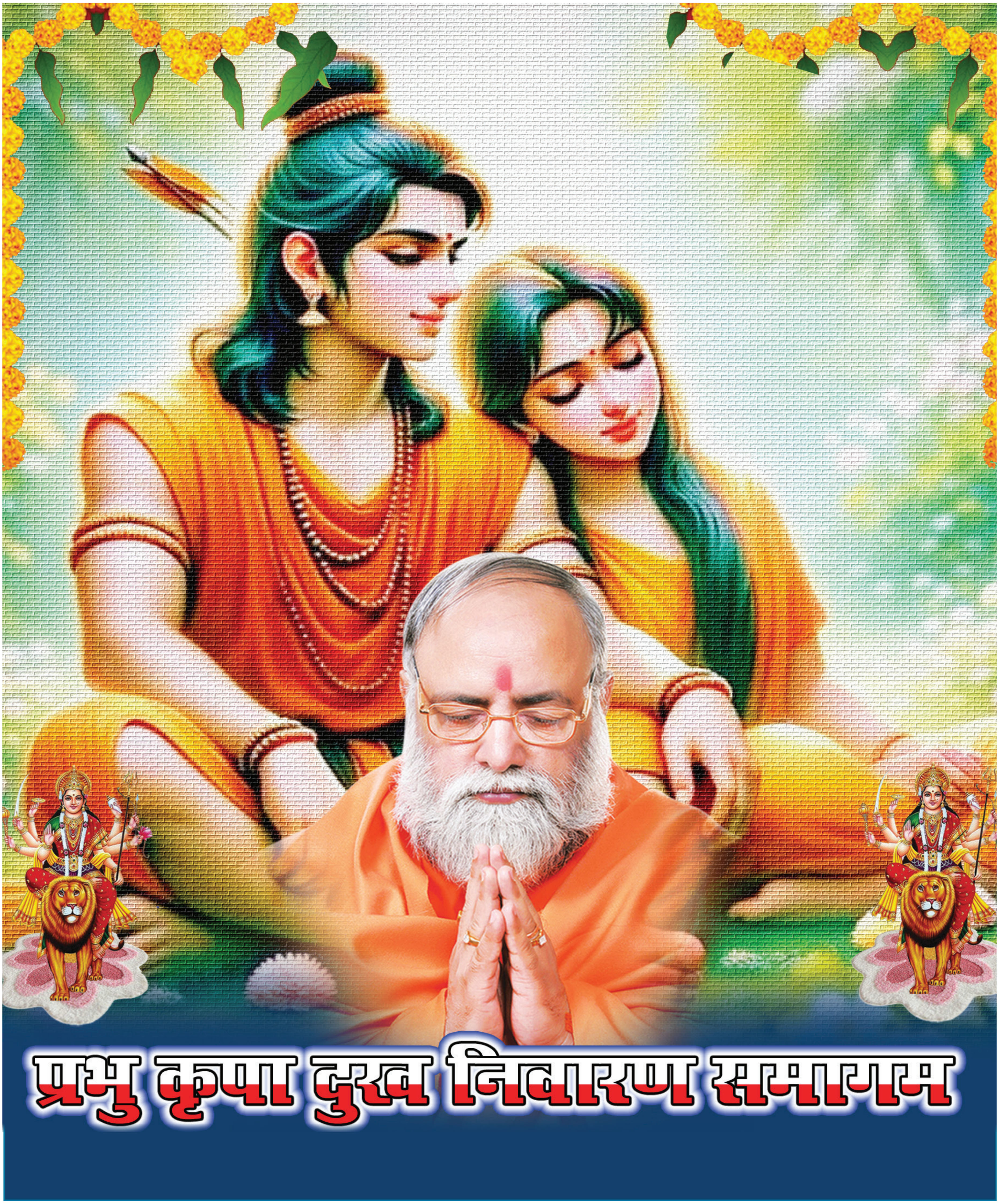
प्रभु कृपा दुख निवारण समागम

BY

Arihanta Industries

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

ULTIMATE HAIR SOLUTION

NO ARITIFICIAL COLOR FRAGRANCE CHEMICAL

100 ML

15 ML

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.

Arihanta Industries

ORDER ONLINE @ :

amazon arihanta.in